Women Empowerment, Skill Enhancement and Media: Prospects and Challenges

Prof Dr. Charu Lata Singh
Dr. Vaishali Billa
Dr. Sunil Kumar Mishra

GLOBAL BOOKS ORGANISATION
Delhi - 110 059 (India)

Published by

Global Books Organisation

(Publishers & Distributors)
Saraswati House,
U-9, Subhash Park, Uttam Nagar, New Delhi-110059 (India)
Phone: 011-25335169, 9899071610, 9899521610
e-mail # akgpost@gmail.com,globalbooks001@gmail.com
© Author

Edition 2017

ISBN: 978-93-80570-26-6

Price: 1800/-

[All rights reserved. No part of this book can be reproduced in any manner or by any means without prior permission of the Author.]

Disclaimer: The Contributors of papers are responsible for the content in their paper.

PRINTED IN INDIA

Published by *Anil Kumar for Global Books Organisation*, Delhi Laser typeset at *Book One Graphics, Delhi and Printed at H.S. Printer, Delhi.*

16

Empowering Women By New Media Through Strong Portrayals

Dr. Gopa Bagchi*, Dr. Sudhir Kumar**

Abstract

Empowerment of women is an important issue in recent time. As per the latest Census in the year 2011, the total female sex ratio in India is 940 per 1000 males. The population of India is more than 1.21 billion and out of this, women constitute nearly 50% of the total population. Women empowerment in India is a much debated topic. It is undoubtedly true that empowerment of women can be made possible by education through mass media. Mass media is believed to mould public opinion but it has failed to break down the age old beliefs and stereotypes related to women. The attitude of millions of Indians towards women remains the same. Empowering women aims to inspire them and persuade them to come out from different adverse conditions, be it societal or religious, that have traditionally kept them suppressed and unable to see their true strength, power and beauty. We are living in the modern era, even though; today in the rural areas women are suffering from various problems in different fields of life.

New Media plays can play a significant role in women's empowerment and its development. Media can create an awakening and instill an inspiration in women to achieve their potential. Internet has served as a vehicle or as a channel to convey information in a useful and easy to understand manner. This extraordinary revolution is affecting the basic structure of societies.

* Associate Professor & Head, Deptt. of Journalism & Mass Communications, Guru Ghasidas Vishvidyalaya (Central University).

** Assistant Professor, Deptt. of Journalism & Mass Communications, Guru Ghasidas Vishvidyalaya (Central University).

मूल्यानुगत मीडिया के आयने
आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव

संपादक

प्रो. अनिल कुमार राय

डॉ. अख़्तर आलम

प्रकाशन

शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली–110007

ISBN : 978-93-85144-77-6

© प्रो. अनिल कुमार राय

ई–मेल : raianilankit@gmail.com

प्रकाशक : शिवालिक प्रकाशन

27/16, शक्ति नगर, दिल्ली–110007

फोन नं – 011–42351161

प्रकाशन वर्ष : 2016

संस्करण : प्रथम

प्रकाशन सहयोग : भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय मीडिया संगोष्ठी "आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव" के आयोजन के लिये प्राप्त सहयोग धनराशि के प्रावधान के तहत प्रकाशित।

मुद्रक : गुरुकृपा क्रियेशन

रामाकृष्णा हॉटेल के पीछे मेन रोड वर्धा महाराष्ट्र

मो. 8888993996

नोट : पुस्तक में संकलित आलेखों में लेखकों के अपने विचार हैं, संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मूल्यानुगत पत्रकारिता के लिए प्रतिबद्ध
मीडियाकर्मियों को सादर समर्पित...

55. सार्वजनिक योजनाओं के क्रियान्वयन में मीडिया की भूमिका (लाडली लक्ष्मी योजना के संदर्भ में)	उमेश कुमार, अरुण कुमार भाटिलकर	296–300
56. रंगमंच और फिल्मों में मिथकीय कथानक : सामाजिक सरोकार और प्रतिरोध के कुछ विशिष्ट स्वर	अभिषेक त्रिपाठी	301–305
57. शांति के नायक बापू और उनकी पत्रकारिता	शिव गोपाल यादव, विजय कुमार यादव	306–309
58. प्रिंट मीडिया का बदलता हुआ स्वरूप		310–314
59. किसान आत्महत्या के दौर में मीडिया के सामाजिक सरोकार	स्मृतिका सूत	315–319
60. वैकल्पिक मीडिया और सामाजिक सरोकार	संघर्ष मिश्र, राकेश कुमार	320–324
61. मोदी, विकास, सामाजिक परिवर्तन और मीडिया एक जाय पड़ताल	विकास सिंह	325–332
62. कार्टून सीरियल और बच्चे	बलराम बिंद	333–338
63. हिंदी भाषा के विकास में नए जनसंचार माध्यमों	अनुपमा कुमारी, डॉ. नवल रंजन	339–343
64. द्वेषपूर्ण भाषणों का राजनीतिक संचार पर प्रभाव	डॉ. रेणु सिंह	344–348
65. गांधी की आध्यात्मिकता और सामाजिक बदलाव	डॉ. अख्तर आलम, कु. अनुपमा	349–354
66. संचार माध्यमों में लोकगीतों की भूमिका	डॉ. चंद्रशेखर एल. जाफरे	355–357
67. संचार माध्यमों का भारतीयकरण और अध्यात्म : जागरण कुछ नई चुनौतियां	डॉ. विजय कुमार धाकरकर	358–360
68. आध्यात्मिकता, मूल्य और सामाजिक बदलाव	शंभु जोशी	361–363
69. अभी भी लौट सकते हैं मूल्य	प्रो. कमल दीक्षित	364–366

सामाजिक सरोकार और मीडिया की भूमिका

(बिलासपुर जिले के संदर्भ में)

*डॉ. गोपा बागची/**गुरु शरन लाल

मीडिया के उद्देश्य, कार्यों और भूमिका की समय–समय पर चर्चा–परिचर्चा, बहस होती रही है। वैश्वीकरण के इस दौर में मीडिया का उद्देश्य सिर्फ सूचना, शिक्षा और मनोरंजन प्रदान करने तक ही सीमित नहीं रह गई है। मीडिया का उद्देश्य, कार्य, उत्तरदायित्व और भूमिका में वृद्धि हुई है जो वर्तमान समय की मांग है। प्रेस के चार सिद्धान्तों में सामाजिक उत्तरदायित्व का सिद्धान्त भी है। इसके अनुसार मीडिया/प्रेस को सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन करना चाहिए। समाज के लोगों की बेहतरी के लिए कार्य करना चाहिए। विभिन्न सामाजिक सरोकारों पर लगातार सामग्रियों का प्रकाशन–प्रसारण करना चाहिए। गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, अशिक्षा, असमानता, अत्याचार, दमन, शोषण इत्यादि के निराकरण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। महिला सशक्तिकरण, दलित, आदिवासी विकास, बच्चों से जुड़े मुद्दे, नैतिक मूल्य, आदि के लिए भी कार्य करना चाहिए।

मीडिया के सामाजिक सरोकार:

गरीबी–भुखमरी: गरीबी एक अभिशाप है। बहुत सारे लोग आज भी सिर्फ इसलिए मर जाते हैं क्योंकि उनके पास खाने के लिए खाना नहीं होता। भारत में करोड़ों लोग सिर्फ एक समय का भोजन कर पाते हैं। ऐसे में मीडिया की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वह सरकार तक इन बातों को पहुंचाए। लगातार समाचार, लेख, फीचर, फोटोग्राफ आदि माध्यमों से सरकार तक गरीबी से जुड़े मुद्दों को पहुंचाना चाहिए। साथ ही आम लोगों को भी संवेदना जगाने का कार्य करना चाहिए।

बेरोजगारी: मीडिया की ये भी जिम्मेदारी है कि देश के शिक्षित बेरोजगारों को रोजगार की संभावनाओं से अवगत कराना। रोजगार समाचारों का प्रकाशन–प्रसारण करना। कैरियर काउंसलिंग, परामर्श देना, विषय चयन में मदद करना है। प्रेरक व मार्गदर्शक लेख, फीचर आदि का प्रकाशन करना।

अशिक्षा: मीडिया लोगों को अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करती है। खासकर फीचर विभाग द्वारा प्रकाशित होने वाले आलेख, रचनात्मक लेख, कविताएं, कहानियां, गजल आदि के माध्यम से समाज को दिशा मिलती है। नैतिक मूल्यों को बढ़ावा मिलता है। संवेदनाएं जागती हैं।

असमानता: समाज के वे तबके जो विकास की मुख्यधारा से कटे हुए हैं, समाज में जिन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है, मीडिया को उन्हें समानता दिलाने में प्रयास करना चाहिए। दलित, आदिवासी लोगों को समाज में बराबरी का दर्जा नहीं था। लेकिन भारतीय संविधान में उन्हें बराबरी का दर्जा प्राप्त है। बावजूद इसके व्यावहारिक तौर पर देखा जाए तो समाज में आज

के साथ भेदभाव किया जाता है। जो कि गलत है और संविधान के खिलाफ है। मीडिया द्वारा इस मुद्दे पर प्रकाशन–प्रसारण करना चाहिए।

अत्याचार: समाज में महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों तथा कमजोर वर्गों पर होने वाले अत्याचार के खिलाफ भी मीडिया को कार्य करना चाहिए। आए दिन समाज में इन वर्गों पर अत्याचार की खबरों का प्रकाशन–प्रसारण होता रहता है। इससे सामाजिक नियन्त्रण को बल मिलता है।

दमन–शोषण: सदियों से चला आ रहा है कि समाज का उच्च वर्ग निम्न वर्ग का शोषण करता है। दमन–शोषण आज भी जारी है। लेकिन इसके स्वरूप बदल गये हैं। इसकी शक्ल बदल गई है। लेकिन इससे वही पीड़ा है, दर्द है। इन्सान ही इन्सान का दमन–शोषण करता है। इससे संबंधित खबरें भी मीडिया को प्रकाशित करनी चाहिए। केस स्टडी के माध्यम से भी उनके खबरों का प्रकाशन करना चाहिए।

महिला सशक्तिकरण: महिलाएं समाज का महत्वपूर्ण अंग हैं। महिलाओं की तरक्की के बिना कोई भी समाज तरक्की नहीं कर सकता। महिलाओं की समाज में दयनीय स्थिति है। हालांकि कई क्षेत्रों में महिलाओं ने महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है लेकिन यह प्रतिशत बहुत ही कम है। आज भी महिलाओं के खिलाफ अत्याचार, दुराचार, हिंसा बदस्तूर जारी है। समाज में महिलाओं को सम्मान दिलाना और उन्हें सामाजिक रूप से सशक्त बनाने में मीडिया की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

दलित–आदिवासी विकास: दलितों और आदिवासियों के विकास में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। दलित–आदिवासी समाज सदियों से विकास की मुख्यधारा से कटा हुआ है। समाज के विभिन्न वर्गों के दमन–शोषण का सदियों तक शिकार हुआ यह वर्ग आज भी अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। सरकार की विकास संबंधी विभिन्न नीतियों, योजनाओं तथा संविधान द्वारा प्रदत्त आरक्षण के प्रावधानों के बावजूद भी यह वर्ग समाज में बदहाली का शिकार है। मीडिया द्वारा दलित–आदिवासी विकास पर बल देना चाहिए। इनसे जुड़े मुद्दों को उठाना चाहिए।

बच्चों से जुड़े मुद्दे: बच्चे देश के भविष्य हैं। बच्चों की अच्छी शिक्षा, लालन–पालन, बात–व्यवहार से ही बच्चे समझदार बनते हैं। वर्तमान में बच्चों पर होने वाले अपराधों में वृद्धि हुई है। बाल श्रम, बाल अपराध, यौन शोषण, अपहरण, बाल मजदूरी आदि समाज में एक अभिशाप की तरह है। मीडिया को बच्चों के खिलाफ होने वाले अपराधों के खिलाफ एक मुहिम चलानी चाहिए। बच्चों के भविष्य के लिए सरकार व समाज में चेतना विकसित करनी चाहिए।

नैतिक मूल्य: समाज में नैतिक मूल्यों का पतन तेजी से हुआ है। सामाजिक संबंधों में आई गिरावट इसका एक कारण है। लोगों का अपने में सिमट जाना, एकल परिवार, न्यूक्लियर फैमिली, सोशल मीडिया आदि के कारण लोग अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। यहां तक कि परिवार में ही लोग एक–दूसरे से कम बात करते हैं। शिष्टाचार, सदाचार, अच्छा आचरण तो जैसे गुजरे जमाने की बातें लगती हैं। मीडिया द्वारा समय–समय पर नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए कार्य करना चाहिए। लेख, फीचर, फोटोग्राफ्स आदि के माध्यम से यह कार्य आसानी से किया जा सकता है।

सूचना का अधिकार: सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 लोगों को वरदान की तरह है। सरकारी कार्यालयों में कार्यों में पारदर्शिता लाने और जवाबदेह बनाने के उद्देश्य से लाए गए इस अधिनियम से वास्तव में सरकारी कामकाज में सुधार हुआ है। खासतौर पर भ्रष्टाचार को कम करने में मदद मिली है। नौकरशाही, अफसरशाही में सुधार हुआ है। लेकिन इस अधिनियम को लेकर लोगों में कुछ भ्रांतियां भी हैं। जैसे–सूचना कहां से मिलेगी, प्रक्रिया क्या है, कितने दिनों में सूचना मिलेगी, सूचना न मिलने पर कहां अपील करनी होती है आदि। मीडिया को इन सभी मुद्दों पर लोगों को जागरूक करना चाहिए।

मानवाधिकारों का संरक्षण: मानवाधिकार के अन्तर्गत मनुष्य के अधिकारों का संरक्षण किया जाता है। जीने का अधिकार, शिक्षा, समानता का अधिकार मानवाधिकारों के अन्तर्गत ही आते हैं। मानवाधिकारों के संरक्षण में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है।

बिलासपुर में मीडिया की स्थिति:

छत्तीसगढ़ में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, परम्परागत माध्यम और न्यू मीडिया का संजाल बिछा हुआ है। विकास के विभिन्न विषयों और मुद्दों को मीडिया द्वारा समय–समय पर उठाया जाता है। सरकार की नीतियों, योजनाओं, विकास कार्यक्रमों इत्यादि का प्रचार–प्रसार मीडिया द्वारा किया जाता है। लोगों को सूचना, शिक्षा और मनोरंजन प्रदान करने के साथ–साथ जनजागरूकता फैलाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लेकिन दूरदराज के क्षेत्रों में जहां मीडिया की पहुंच नहीं है या कम है वहां विकास में दिक्कतें आ रही हैं।

प्रिंट मीडिया:

बिलासपुर में हिंदी भाषा के दैनिक भास्कर, नई दुनिया, नवभारत, हरिभूमि, देशबन्धु, छत्तीसगढ़, लक्ष्य पथ, स्वदेश, इवनिंग टाइम्स, प्रखर संदेश, लोक स्वर समाचार पत्रों का प्रकाशन होता है। अंग्रेजी माध्यम के समाचार पत्रों में हितवाद का स्थानीय संस्करण एवं टाइम्स ऑफ इंडिया, हिन्दुस्तान टाइम्स और द हिन्दू समाचार पत्रों के राष्ट्रीय संस्करण उपलब्ध होते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया–

बिलासपुर में आकाशवाणी के प्रसारण सुनवाये जाते हैं और दूरदर्शन के कार्यक्रमों को रायपुर से रिले करके दिखाये जाते हैं। साथ ही निजी क्षेत्र के जी 24 घंटे छत्तीसगढ़, ईटीवी, पीटीवी, सिटी चैनल, ग्रांड चैनल और साधना चैनल का प्रसारण किया जाता है। बिलासपुर में एक मात्र निजी रेडियो चैनल माई एफ.एम. है, जो यहां के युवाओं के आकर्षण का केंद्र है।

बिलासपुर से प्रसारित होने वाले टेलीविजन चैनल:

बिलासपुर से मुख्यरूप से तीन स्थानीय टेलीविजन न्यूज चैनलों का प्रसारण होता है–सीजीएन–अभी तक, सीटी न्यूज और ग्रांड न्यूज। इन तीनों चैनलों के कार्यक्रम बिलासपुर

MEDIA AND SOCIAL CHANGE

Editors

Dr. Vindo Nitale
Dr. Sudhir Bhatkar
Dr. Gopi Sorde

ATHARVA PUBLICATION'S

ATHARVA PUBLICATION'S

Media and Social Change

© Reserved

ISBN : 978-93-86196-38-5

Publisher & Printer
Mr. Yuvraj Mali

Atharva Publications
Dhule 17, Devidas Colony, Varkhedi Road, Dhule - 424001.
Contact 9405206230
Jalgaon Basement, Om Hospital, Near Anglo Urdu Highschool, Dhake Colony, Jalgaon - 425001.
Contact 0257-2239666, 9764694797
Email atharvapublications@gmail.com
Website www.atharvapublications.com

First Edition
30th January, 2017

Type Setting
Atharva Publications

Price
450/-

online पुस्तक खरेदीसाठी
www.atharvapublications.com

Disclaimer: The Authors are solely, responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The Editors or Publishers do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any are purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the Editors or Publishers to avoid discrepancies in future.

सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका

डॉ. गुरु सरन लाल*
डॉ. गोपा बागची**

प्रस्तावना: सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक विकास के लिए एक अनिवार्य शर्त है। या यूं कहें कि सामाजिक परिवर्ततन की प्रक्रिया ही सामाजिक विकास है। बिना सामाजिक परिवर्तन के सामाजिक विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। सामाजिक परिवर्तन में कई तत्व निहित हैं। जीवन शैली में बदलाव, खान-पान, रहन-सहन में बदलाव, सोचने-समझने के तरीके में बदलाव एवं नवाचार इत्यादि। मानव सभ्यता ने सदियों का सफर तय किया है। इस दौरान कई पड़ावों से होकर गुजरे हैं। भारतीय सभ्यता की पहचान पूरे विश्व में है। एक तरफ जहां कला, संस्कृति, जीवन शैली, त्यौहार, उत्सव इत्यादि के कारण ये विश्व के आकर्षण का केन्द्र रहा है, वहीं दूसरी तरफ कई सामाजिक बुराईयों से भी लड़ना पड़ा है। और ये लड़ाई लगातार जारी है। सामाजिक विकास में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत ही महत्वपूर्ण है। जब तक लोग जागरूक नहीं होंगे, प्रेरित नहीं होंगे तब तक परिवर्तन की बात नहीं की जा सकती है। लोगों के जागरूक और प्रेरित करने का कार्य मीडिया द्वारा किया जा रहा है।

सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न घटक: सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न घटक हैं जिनके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन विभिन्न चरणों से होता हुआ गुजरता है-

जीवन शैली में बदलाव: जीवन शैली में बदलाव बहुत ही जरूरी है। मनुष्य का रहन-सहन, खान-पान, दिनचर्या आदि मिलकर जीवन शैली कहा जाता है। समय के साथ-साथ जीवन शैली में बदलाव लाजिमी है। वर्तमान जीवन शैली में सबसे महत्वपूर्ण बात ये हुई है कि किसी के पास समय नहीं है। सफलता की चाह में और समय के हिसाब से अपने-आप को ढ़ालते हुए मनुष्य ने अपनी जीवन शैली को विकृत कर लिया है। इसी विकृति का परिणाम कई ऐसी बिमारियां हैं जो सिर्फ विकृत जीवन शैली के कारण पैदा हुई हैं। चिकित्सा विज्ञान में जीवन शैली से उत्पन्न बिमारियों का अध्ययन और इलाज लगातार

* असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
** एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

खत्म करने का प्रयास किया और वे सफल भी रहे। सती प्रथा, बाल विवाह इत्यादि के खिलाफ वे लगातार लड़ते रहे, लिखते रहे। तब जाकर उस सामाजिक बुराई को खत्म किया जा सका। परिवर्तन गतिशील और सतत् प्रक्रिया है।

सूचना तकनीक के साथ सामंजस्य: वर्तमान युग सूचना तकनीक का युग है। सूचनाएं विभिन्न रूपों में विभिन्न माध्यमों से लोगों तक पहुंच रही हैं। सूचना प्रवाह की गति तीव्र हुई है। समाज ने भी सूचना की ताकत को पहचाना और सूचना तकनीकी उपकरणों का इस्तेमाल किया। इंटरनेट व स्मार्ट फोन के माध्यम से सूचनाओं तक आसानी से पहुंच बना पाना संभव हो गया है।

निष्कर्ष: जनसंचार माध्यमों का उद्देश्य लोगों को केवल सूचना, शिक्षा और मनोरंजन करने तक सीमित नहीं रह गया है। समाज को जागरूक करने, प्रेरित-प्रोत्साहित करने, विकास की और अग्रसर करने का कार्य भी मीडिया द्वारा किया जाता है। सामाजिक परिवर्तन में भी मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। विकास के प्रत्येक चरण में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, परंपरागत माध्यम, न्यू मीडिया तथा सोशल मीडिया द्वारा लगातार विकास के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया जाता है। बहस की जाती है। फॉलोअप दिये जाते हैं तथा एक निश्चित समाधान की ओर बढ़ा जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की अपरिहार्य भूमिका है।

सुझाव:

१. मीडिया द्वारा सामाजिक परिवर्तन के मुद्दों को प्रमुखता देनी चाहिए।
२. सामाजिक परिवर्तन में सरकार, मीडिया और सामाजिक संगठनों को एक साथ समेकित प्रयास करने की जरूरत है।
३. सामाजिक परिवर्तन के लिए सामाजिक आन्दोलनों को समूचित जगह देनी चाहिए।

संदर्भ :

- http://onlinelibrary.wiley.com/doi/10.1111/jcom.2012.62.issue-2/issuetoc
- http://psycnet.apa.org/psycinfo/2004-20896-000/
- http://onlinelibrary.wiley.com/doi/10.1002/9781118541555.wbiepc088
- http://dotcue.net/swtn/upload_newfiles/2.SocialDevelopment-TheConcept.pdf
- https://hbr.org/2012/03/a-unified-theory-of-social-cha.html
- http://www.srjis.com/pages/pdfFiles/14676156874.%20milind.pdf
- https://www.youthkiawaaz.com/2012/08/role-of-media-in-social-development/
- Keval J. Kumar, "Mass Communication in India" Jayco Books, Mumbai, 2004, p-52.
- Sahoo Basudeb "Globalization liberalization and economic development " New century Publications, New Delhi, 2013, p-113.
- K. Sadanandan Nair & S.A. White, "Perspectives on Development Communication", Sage Publications, New Delhi, 1996, p-56
- Joni C.Joseph, "Mass Communication and Rural Development", Rawat Publishers, New Delhi, 1997, p-16.
- Midgley, James; Social Development,1995, SAGE Publications Ltd., New Delhi, Pg. 12-13

जनजातीय संचार : मिथक, प्रतीक और यथार्थ

नागेन्द्र कुमार सिंह

स्वराज प्रकाशन

प्रकाशन कार्यालय

स्वराज प्रकाशन
4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-23289915
E-mail : swaraj_prakashan@yahoo.co.in

शाखा
288, ई.डब्लू.एस., शास्त्रीपुरम
आगरा-282007 (उ.प्र.)

© नागेन्द्र कुमार सिंह

मूल्य : ₹ 1495
प्रथम संस्करण : 2019
ISBN : 978-93-88891-28-8

अजय विश्वा द्वारा स्वराज प्रकाशन, 4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा ओम आफसेट, जगतपुरी शाहदरा, दिल्ली-110093 में मुद्रित

भूमिका

आपके चिंतन दर्शन आयाम में मेरी कलमबद्ध दृष्टि .....

अपने चाहने वालों के चिंतन में अपनी कलम दृष्टि देना वैसा ही प्रतीत होता जैसे सूरज के किरणों के बीच चांद का दर्शन। परन्तु जो चाहता है उसके पास स्वाभाविक ही दृष्टि आकर्षित होती है। आकर्षण का पल परोक्ष–अपरोक्ष दोनों रूपों में परलक्षित होता है। परोक्ष–अपरोक्ष की शक्ति संचार है। संचार अभिव्यक्ति ही शब्द है। शब्द संरचना ही पुस्तक है। पुस्तक का यह स्वरूप आप के चिंतन का शब्द है। शब्द संरचना को कलमबद्ध रूप से सजना ही मेरी दृष्टि है।

दृष्टि अभिव्यक्ति की वह कुंजी है जिसके माध्यम से लोगों से जुड़ा जाता है। जुड़ाव का यह क्रम स्वप्रेरणा का एक दर्शन है। दर्शन अभिव्यक्ति संचार का वह दर्पण है जिसमें मानव अपनी ईच्छा की प्रतिपूष्टी स्वतः अभिव्यक्त करता है। अभिव्यक्ति का सज्ञान ही पुस्तक की जिज्ञासा है। जिज्ञासा मानव के मेधा शक्ति का उपज है। यह उपज निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया सदैव नूतना को परिग्रहण करती है। नूतनता का दर्शन एक चिंतन है। चिंतन स्वभाव ही लेखन है। लेखन को कड़ीबद्ध करना पुस्तक है। पुस्तक एक नवाचार दृष्टि है। दृष्टि स्थापना ही ज्ञान है। ज्ञान पिपासा एक जुड़ाव है। जुड़ाव स्वसाधन साध्य है। साध्य असाध्य का दर्शन है। दर्शन आयाम को एक विषय के रूप में स्थापित करना ही लेखक का ध्येय है। लेखक अपने ध्येय को एक नये विषय के रूप में स्थापित करता है। विषय स्थापना ही आने वाले पीढ़ी की कल्पना बोध की दृष्टि है।

आभारोक्ति:

मैं सुधा मिश्रा, शोधार्थिनी, समाजशास्त्र तथा राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल बाग शिक्षण संस्थान, आगरा, अपनी शोध गुरु डॉ० प्रियंका सिंह का आभार प्रकट करती हूँ, तथा विशेष आभार श्रीमान राहुल व्यास का प्रकट करती हूँ जो मेरी कदम–कदम पर हरसम्भव सहायता करते हैं और समय–समय पर मेरा मार्गदर्शन करते रहते हैं। मैं उन तमाम विद्वानों की भी आभारी हूँ जिनके शोध–पत्रों से मुझे अपना यह शोध–पत्र पूर्ण करने में सहायता मिली है।

सन्दर्भ सूची:

1. Tiwari, A.K. (2010). Samajshastra. Allahabad. Bodhik Prakashan.
2. Gupta & Sharmav (2004). Samajshastra. Agra. Sahitya Bhawan Publication.
3. Mishra, Dr.Shashi (2010). Changes in Lifestyle of Tribes: A Case study of eight tribal groups in Mumbai and Thane district. Mumbai.
4. Guha, Subrata & Ismail, Md (2015). Socio-Cultural changes of Tribes and their impact on Environment with special reference to Santhal in West Bengal. Global Journal of Interdisciplinary Social Sciences. Vol-4(3). Page no: 148-156.
5. Puttaraja & Heggade, O.D. (2012). Economic Empowerment of Trial Women in Karnataka: A Case study in Mysore and Chamarajanagara Districts. Studies of Tribes and Tribals. Vol- 10 (2). Page no- 173-181.
6. Vyas, N.N. (1971). Tribal development in Rajasthan. Tribes, Vol-7(4). Page no- 1-3.
7. Bose, P.K. (1979). Agrarian structure, peasant society and social change: A Study of selected regions in West Bengal. New Delhi.
8. Verma (1960). Socio-Cultural organizations of Tribals. Rajasthan. Metro publishers.
9. Das & Behera (2010). The state of Shamanistic knowledge system in the face of Globalization: Need for a Policy dialogue. New Delhi. Serials Publication.
10. Renuka, P.(1985). Elite in Indian society. Jaipur. Print Well Publishers.

□

5

छत्तीसगढ़ की साहित्यिक पत्रकारिता में आदिवासी जनजाति एवं उनकी संस्कृति

(बिलासपुर के विशेष सन्दर्भ में)

*राकेश कुमार, पी–एच.डी. शोधार्थी
**डॉ. गोपा बागची,एसोसिएट प्रोफेसर

प्रस्तावना

पत्र–पत्रिकाएँ किसी भी देश व समाज की दिशा–निर्देशिका मानी जाती हैं। देश व समाज के भीतर घटती घटनाओं को लोगों के सामने प्रस्तुत करना पत्र–पत्रिकाओं का प्रथम व महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य होता है। समाचार–पत्रों एवं पत्रिकाओं का मूल उद्देश्य सदैव जनता की जागृति और जनता तक विचारों का सही संप्रेषण करना रहा है। समाज में मानव मूल्यों की स्थापना के साथ जन जीवन को विकासोन्मुख बनाना पत्रकारिता का दायित्व रहा है.।मानवता के विकास के दो आधार स्तंभ हैं जिन्हें समाज और संस्कृति कहा जाता है। मानव एक साम.जिक प्राणी है जो समाज में रहता है और सामाजिक नियमों मे रहकर अपना जीवन यापन करता है। समाज के बिना उसका जीवन मुश्किल है और इसके बिना वह स्वयं को विकसित करने में अक्षम पाता है। संस्कृति मानवीय आदर्शों, मूल्यों, स्थापनाओं एवं मान्यताओं का समूह होता है।

संस्कृति किसी जाति या समाज की अंतरात्मा होती है। इसके द्वारा उस देश या राज्य के समस्त संस्कारों का ज्ञान होता है जिनके आधार पर वह अपने सामाजिक व सामूहिक आदर्शों का निर्माण करता है।

अतः प्रत्येक देश की संस्कृति का और उसके अनुकूल उसकी सामाजिक रचनाओं का अन्य देशों की संस्कृति और सभ्यताओं से भिन्न होना तो एक स्वाभाविक बात है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति जहां भारतीय समाज की अंतरात्मा की अभिव्यक्ति है। जीवन मूल्यों के साथ ही साथ संस्कृति में भी आवश्यक परिवर्तन स्वाभाविक है। जीवन कभी स्थिर और एक सा नही रहता है इसलिए संस्कृति में भी जीवन के अनुसार बदलाव आता रहता है। साहित्य को यदि सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों के वाहक के रूप में देखा जाए तो कोई संदेह नही होना चाहिए क्योंकि समाज के आर्थिक और सामाजिक जीवन में परिवर्तन होते रहते हैं और इसके साथ ही साथ सांस्कृतिक जीवन में भी बदलाव आता रहता है।

परंतु यदि आदिवासी जनजाति एवं उनकी सांस्कृतिक जीवन पर गौर किया जाए तो यह देखा जा सकता है कि उनकी सामाजिक जीवन में संस्कृति का बड़ा महत्त्व होता है। शायद सांस्कृतिक जीवनको ज्यादा महत्त्व देने के कारण ही इनके आर्थिक और सामाजिक जीवन में परिवर्तन बहुत ही धीमी गति से होतेहुई दिखाई देता है।

शोध के उद्देश्य

भारत विश्व का सबसे प्राचीनतम संस्कृतियों वाला देश है। भारत की सांस्कृतिक प्रचार एवं प्रसार में साहित्यिक पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आजादी के बाद देश में पत्रकारिता के हर विधा में तेजी से प्रगति हुई है। साथ ही साथ इसकी गुणवत्ता में भी काफी वृद्धि हुई है। पत्रकारिता के फैलाव के साथ ही साथ इनके कई क्षेत्रों में ऐसी समस्यायें पैदा हुई जिसका विश्लेषण करना आवश्यक है। वर्तमान समय में इसकी जरूरत और भी बढ़ गयी है। साहित्य एक पुरानी विधा है, इसका प्रभाव भारत में हो रहे आदिवासी सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों में कितना और कैसा रहा है? यह जानना आज हमारे लिए बहुत जरुरी हो गया है। जिसको इस शोध में निम्नलिखित उद्देश्यों के आधार पर देखने की कोशिश की गई है:

1.छत्तीसगढ़ की साहित्यिक पत्रकारिता में बिलासपुर में रहने वाली जनजातियों की सांस्कृतिक स्थति का अध्ययन करना।

2.छत्तीसगढ़ की साहित्यिक पत्रकारिता में प्रस्तुत सांस्कृतिक सूचनाओं का अंतर्वस्तु विश्लेषण करना।

3.बिलासपुर की साहित्यिक पत्रकारिता का आदिवासी संस्कृति के विकास में भूमिका का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

इस शोध को निम्नलिखित परिकल्पनाओं के अन्तर्गत रखकर पूर्ण किया गया है

1.साहित्यिक पत्रकारिता ने आदिवासी संस्कृति को हर वर्ग तक पहुँचाया है।

2.साहित्यिक पत्रकारिता ने आदिवासी संस्कृति को संजोने में अपनी अहम् भूमिका निभायी है।

3.साहित्यिक पत्रकारिता ने आदिवासी संस्कृति के विकास के लिए एकमंच प्रदान किया है।

4.साहित्यिक पत्रकारिता का आदिवासी संस्कृति के विकास में किसी भूमिका में नजर नहीं आती है।

शोध प्रविधि

अनुसंधान का प्रमुख लक्ष्य वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग द्वारा प्रश्नों के उत्तर खोजना है। इसका उद्देश्य अध्ययनरत समस्या के अंदर छिपी यथार्थता का पता लगाना या उन चीजों की खोज करना है जिसकी जानकारी समस्याओं के बारे में नहीं है। किसी भी विषय में शोध करते समय उस विषय में किन–किन शोध के प्रकार अर्थात् किस अनुसंधान के प्रकार का उपयोग किया गया है उस पर शोध का महत्त्व निर्भर करता है। प्रस्तुत वर्णनात्मक अनुसंधान में गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। इस शोध के आंकड़ों को प्राप्त करने के लिए द्वितीयक स्रोत का इस्तेमाल किया गया है।

साहित्यिक पत्रकारिता

साहित्य किसी भी देश की संस्कृति एवं सभ्यता का वाहक मानी जाती है। भारतीय साहित्य एवं संस्कृति अपने आप में अनोखी है। हिंदी के आरंभिक काल से ही कवियों एवं कहानीकारों ने भारतीय संस्कृति को अपने लेखों में सबसे ज्यादा स्थान दिया है। अगर ध्यान से देखें तो यह स्पष्ट रूप से दिख जाता है कि साहित्य की उत्पत्ति ही संस्कृति को कहीं न कहीं से प्रचारित और प्रसारित करने के उद्देश्य से ही हुआ है। इन्होंने संचार के पारंपरिक स्रोतों को अपनी रचनाओं में सदा से ही स्थान दिया

कारण इसे बंद करना पड़ गया। सप्रे जी ने लोकमान्य तिलक के मराठी केसरी को यहाँ हिंदी केसरी के रूप में छापना प्रारंभ किया तथा साथ ही हिंदी साहित्यकारों व लेखकों को एक सूत्र में पिरोने के लिए नागपुर से हिंदी ग्रंथमाला भी प्रकाशित की। उन्होंने कर्मवीर के प्रकाशन में भी महती भूमिका निभाई। माधवराव सप्रे ने 'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन छत्तीसगढ़ क्षेत्र में हिंदी एवं शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए ही किया था। 'छत्तीसगढ़ मित्र' ने इस उद्देश्य को पूरा भी किया। किंतु, 'छत्तीसगढ़ मित्र' को तत्कालीन जमींदारों और राजाओं की ओर से अपेक्षित सहयोग नहीं प्राप्त हुआ।वहीं छत्तीसगढ़ का प्रथम दैनिक समाचार पत्र के रूप में "महाकौशल" साप्ताहिक समाचार पत्र की शुरुआत सन् 1934 में रायपुर से पंडित रविशंकर शुक्ल के संपादन में की गई।

बिलासपुर से दैनिक समाचार पत्र की शुरुआत

बिलासपुर जिले से पहला दैनिक "राष्ट्रवाणी" वर्ष 1960 में पंजीकृत हुआ, उसके बाद लगभग 14 वर्षों बाद सन् 1974 में 'बिलासपुर टाइम्स' 1979 में लोकस्वर, 1984 में नवभारत एवं 1990 में देशबंधु का प्रकाशन शुरू हुआ। 2001 में 'दैनिक हरि भूमि' बिलासपुर से ही आरम्भ हुआ।बिलासपुर से प्रकाशित प्रमुख दैनिक समाचार पत्र:

1. हरिभूमि
2. नवभारत
3. देशबंधु
4. नईदुनिया
5. राज एक्सप्रेस
6. हाईवे चैनल
7. पत्रिका
8. छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस
9. यूनिवर्सिटी स्टूडेंट एक्सप्रेस
10. स्वदेश
11. नवप्रदेश
12. कही अनकही
13. एक्सप्रेस न्यूज
14. इवनिंग टाइम्स
15. अमृत संदेश
16. समय दर्शन
17. दैनिकभास्कर

(http://rajeshsinghkshatri-blogspot-com/chhattisgarh&ke&pramukh&dainik&samachar-html)

शोध निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि छत्तीसगढ़ की साहित्यिक पत्रकारिता में बिलासपुर जिले की अहम् भूमिका रही है। यहाँ

पर आदिवासी जनजातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए कई प्रकार के पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन किया गया। अगर ध्यान से देखा जाये तो यह दिख जाता है कि शिक्षा की अलख जगाने के लिए माधव राव सप्रे जी ने बिलासपुर जिले के पेंड्रारोड से ही 'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन किया था। उस समय यह भाग मध्य प्रदेश के सबसे पिछड़े हुए क्षेत्रों में से एक था। आज भी यह क्षेत्र छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश राज्य के सीमा पर स्थित है। यहाँ पर रहने वाली जनजातियाँ आज भी काफी पिछड़ी हुई हैं। इनके विकास के लिए समय–समय पर छत्तीसगढ़ तथा मध्यप्रदेश की सरकारों द्वारा कई प्रकार की सरकारी योजनाओं को भी लागू किया गया। आज "आदिवासी समाज और संस्कृति के प्रति हमारे तथाकथित सुसंस्कृत समाज को अपनी सोच बदलनी पड़ेगी क्योंकि यदि देश की सभी समुदायों ने विकास नहीं हो पाया तो हम अपनी वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं कर पाएंगे। वो चाहे सैलानी–पत्रकार लेखक हो या समाजशास्त्री हो आज सभी को एक साथ आने की जरूरत है।

संदर्भ

1. Retrvied from http://iabmassindia-blogspot-com-html on 02/03/2019
2. Retrvied fromhttps://www-rachanakar-org/htmlon 03/03/2019
3. Retrviedfromhttp://www-sahityasudha com/articles/lekh/monika_meena/adivasi-html on 05/03/2019
4. Retrviedfromhttps://www-chhattisgarhe(ams-in-Special&backward&tribes&in&Chhattisgarh-html on 08/03/2019
5. Retrvied fromhttps://avadhbhumi-wordpress-com/tag on 08/03/2019
6. Retrviedfromhttp://rajeshsinghkshatri-blogspot-com/chhattisgarh&ke&pramukh&dainik&samachar-html on 10/03/2019
7. (राकेश कुमार, पी–एच.डी. शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़)
8. ("डॉ. गोपा बागची, एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़)

❒

आदिवासी कहानी साहित्य और विमर्श

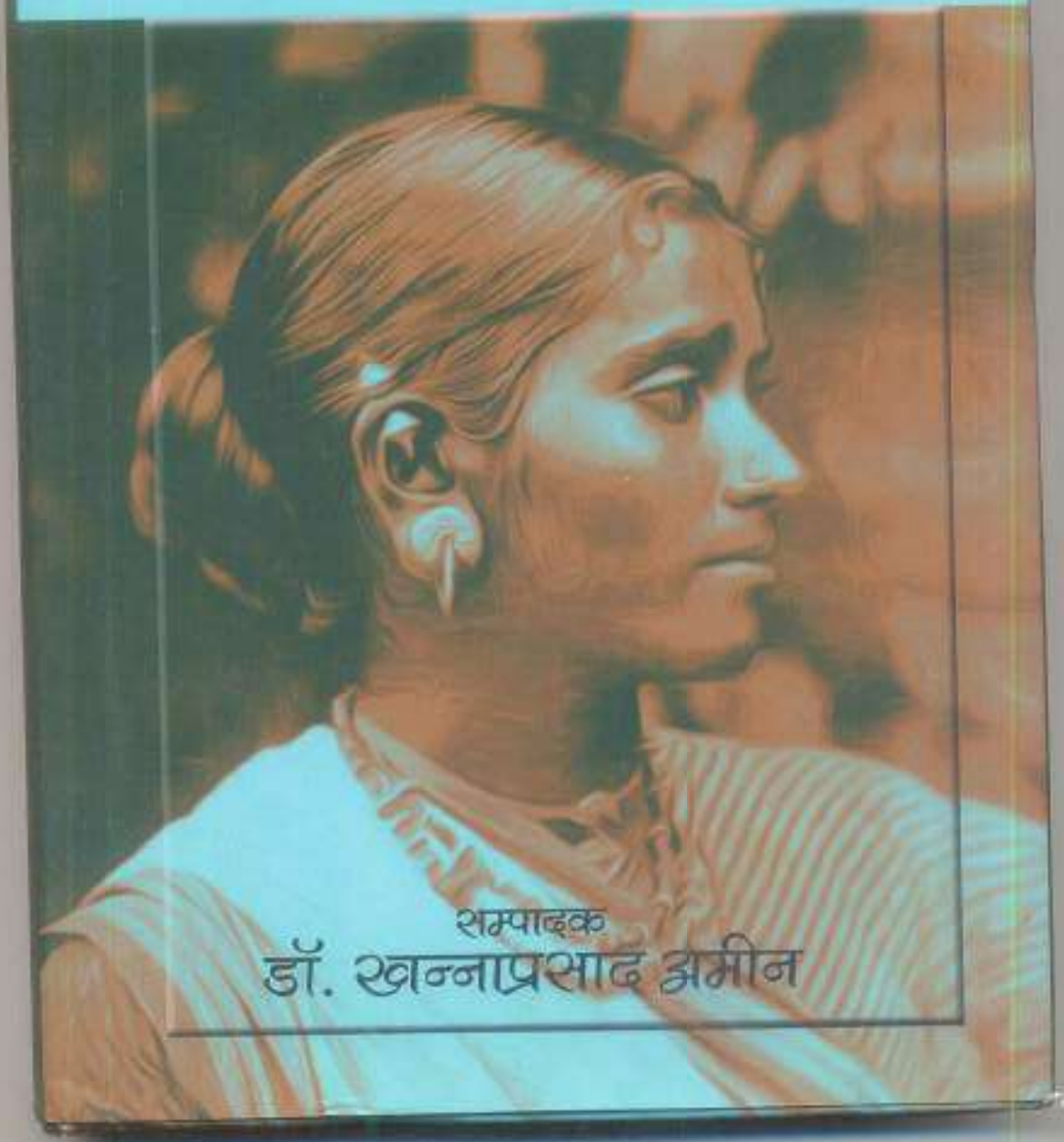

सम्पादक
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन

14. हिन्दी में आदिवासी जीवन केन्द्रित कहानियों का संक्षिप्त विश्लेषण	–डॉ. सुरेश कुमार वसावा	141
15. हिन्दी आदिवासी कहानियाँ : संघर्ष, शोषण, विस्थापन एवं दर्द का दस्तावेज	–डॉ. धीरज वणकर	148
16. समकालीन हिन्दी कहानी और आदिवासी जीवन-सन्त्रास	–डॉ. कुलदीप सिंह मीणा	156
17. प्रायश्चित का दंश	–डॉ. अमिता	162
18. मूल निवासियों के अपकर्ष (पतन) एवं हीनता-बोध की भाषिक कहानी के आधारभूत तत्त्व	–डॉ. श्रवण कुमार मेघ	165
19. बहू जुठाई : अपनी जमीन से जुड़ी कहानियाँ	–डॉ. जशवंत एस. राठवा	182
20. बस्तर की लोक-कथाओं में चित्रित सांस्कृतिक परिदृश्य	–डॉ. विनीता रानी	187
21. कुंकणा जाति और उसकी राम-कथा	–डॉ. हेतल जी. चौहाण	192
22. आदिवासी कहानी और समाज	–डॉ. राखी के. शाह	197
23. समसामयिक हिन्दी साहित्य चेतना का स्वर-आदिवासी चेतना	–डॉ. के. सुवर्णा	200
24. हिन्दी आदिवासी कहानी साहित्य– एक विवेचन	–प्र. आमलापुरे सूर्यकान्त विश्वनाथ	207

विविध विमर्श

25. आदिवासी संस्कृति : दशा एवं दिशा	–डॉ. जनक सिंह मीना	215
26. वनवासियों की वेदना का स्वर : 'आदिवासी की मौत'	–बुद्धिनी कुमारी	225
27. हिन्दी लेखन और आदिवासी साहित्य	–डॉ. संजीव कुमार	238
28. भूमंडलीकरण और आदिवासी अस्मिता	–डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन	243
29. 'छाइनं' उपन्यास और आदिवासी समाज	–डॉ. सुरेश कुमार निराला	247
लेखकों का परिचय		251

कहानी सा

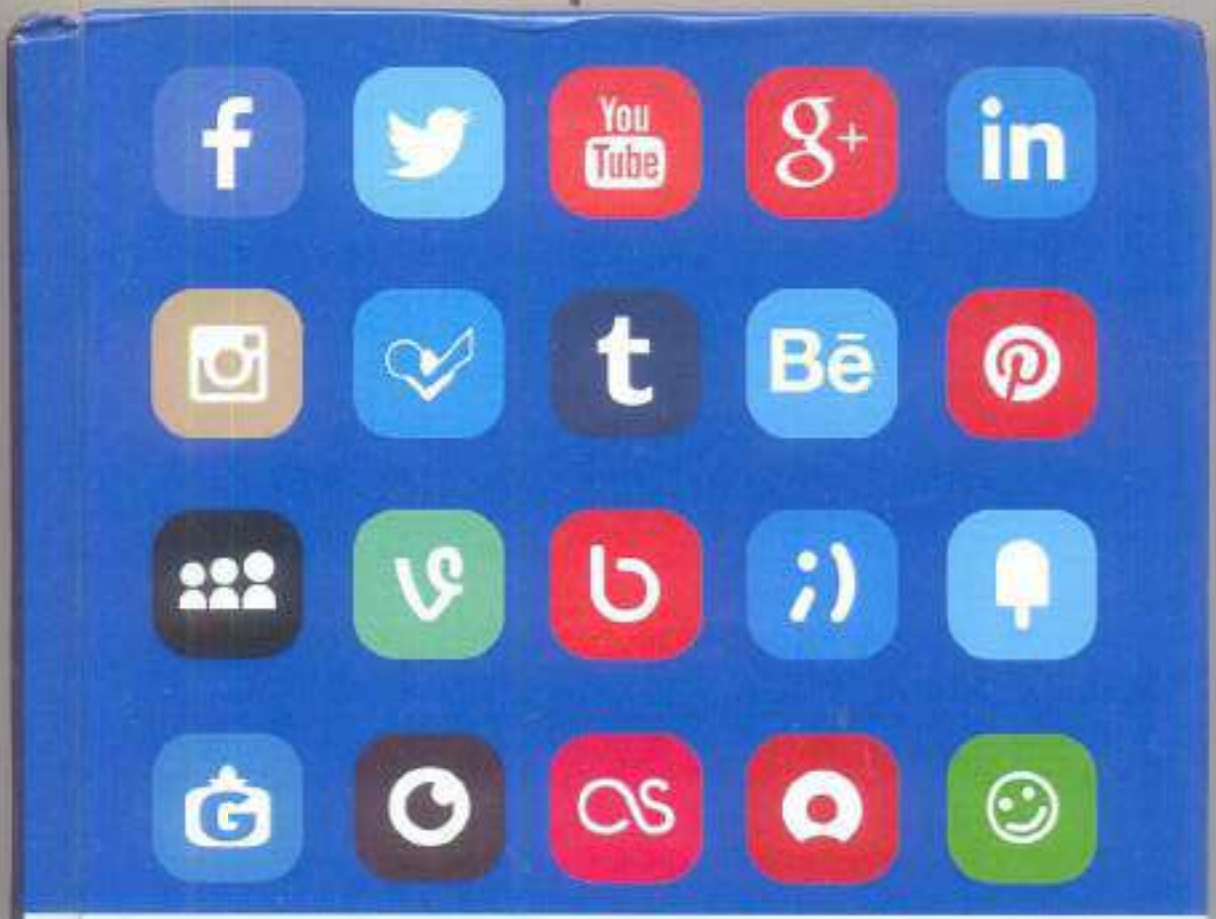

सोशल मीडिया के विविध आयाम

सम्पादक

डॉ. मोहम्मद फ़रियाद

स्वराज

अनुक्रमणिका

शोध-पत्र का नाम	लेखक	पृष्ठ संख्या
1. सोशल मीडिया : वरदान या अभिशाप	प्रो. डॉ. दीपक शिंदे	11
2. फिल्म विपणन और सोशल मीडिया : बढ़ता दायरा, बदलता स्वरूप	डॉ. अनुराग दवे	17
3. सोशल मीडिया : अभिव्यक्ति का बेहतर माध्यम, लेकिन लगाम भी जरूरी	*आशीष जोशी **महेंद्र गुप्ता	29
4. सोशल मीडिया का समाजीकरण	डॉ. रुद्रेश नारायण मिश्र	37
5. जनांदोलनों का आधुनिक हथियार : सोशल मीडिया	डॉ. अमिता	41
6. न्यू मीडिया के विविध स्वरूप और बदलता वर्तमान सामाजिक परिवेश	डॉ. संदीप कुमार	47
7. वैकल्पिक मंच सोशल मीडिया : प्रभाव एवं चुनौतियाँ	डॉ. रामशंकर	55
8. साइबर अपराध और सोशल मीडिया : समस्या एवं समाधान	*अनिल कुमार पांडे **श्वेता रानी भारद्वाज	65
9. सोशल मीडिया की पत्रकारिता में उपयोगिता	*मो. ज़ीशान **मो. नूर अली इमाम हसन	79
10. साहित्य को नया आयाम देता सोशल मीडिया	डॉ. संतोष कुमार बघेल	85
11. सोशल मीडिया : संचार और संवाद का एक नया दौर	*अमित कुमार सिंह **राम अवतार यादव	91
12. उपभोक्ता-सशक्तीकरण और सोशल मीडिया	विकास चन्द	99
13. साइबर स्पेस, सोशल मीडिया एवं अस्मिता-निर्माण	देवेंद्र नाथ तिवारी	107

Users/amita/Downloads/Jan%20Andolan%20(1).pdf

जन आंदोलन: कल और आज

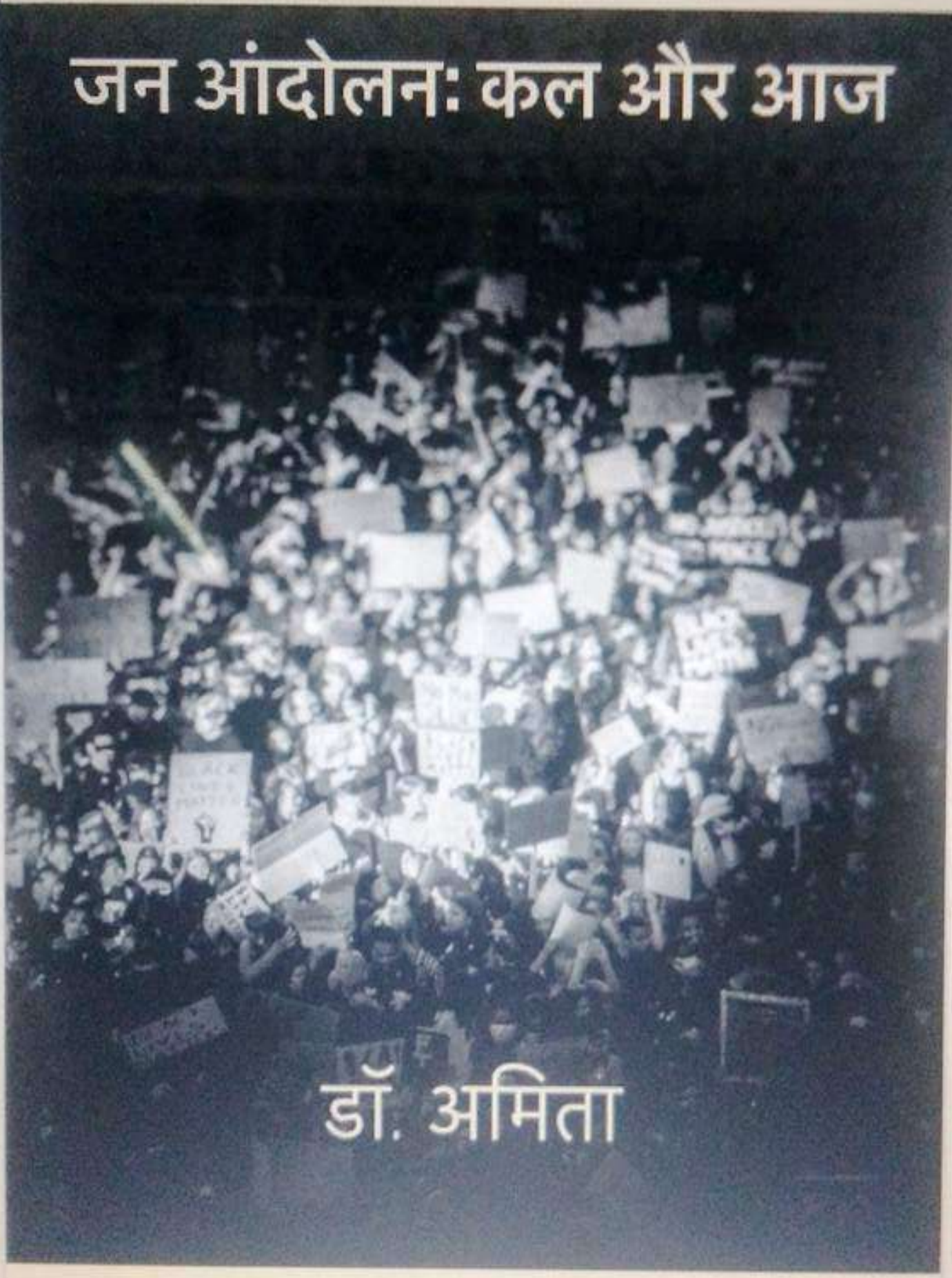

डॉ. अमिता

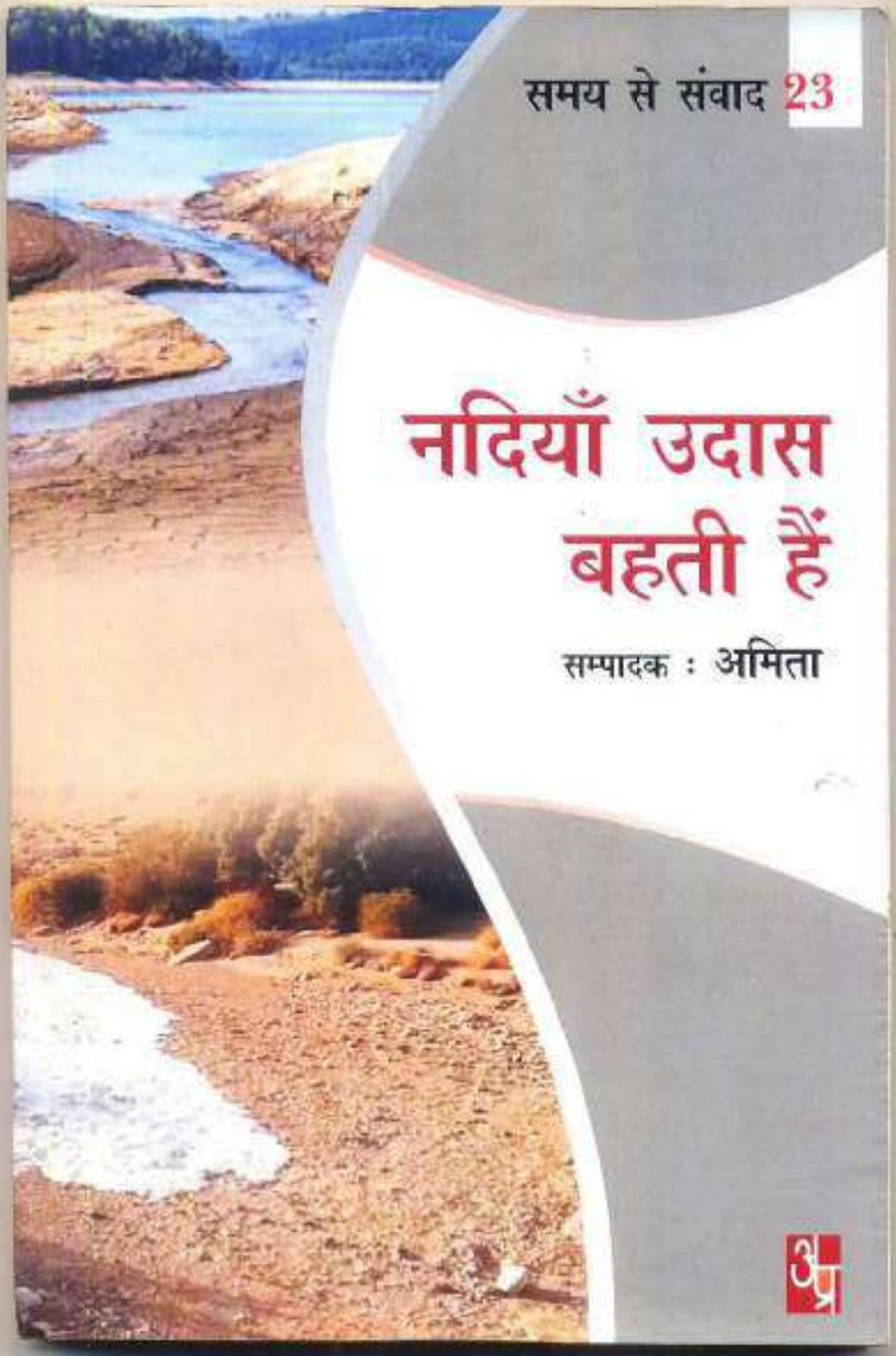

समय से संवाद 23

नदियाँ उदास बहती हैं

सम्पादक : अमिता

समय से संवाद : 23

नदियाँ उदास बहती हैं

सम्पादक

अमिता

शृंखला सम्पादक

किशन कालजयी

अप्र

अनन्य प्रकाशन

मूल्यानुगत मीडिया के मायने

आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव

संपादक
प्रो. अनिल कुमार राय
डॉ. अख़्तर आलम

आलेख / शोध–पत्र अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक	पृ. सं.
1.	सामाजिक सरोकार और मीडिया की भूमिका (बिलासपुर जिले के संदर्भ में)	डॉ. गीता बागची गुरु सरन लाल	1–5
2.	मीडिया के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति में निहित नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता (श्री रामचरितमानस के विशेष संदर्भ में)	डॉ. उर्वशी परमार	6–11
3.	सामाजिक परिवर्तन एवं संचार माध्यम	सुश्री तसनीम खान	12–16
4.	सामुदायिक मीडिया "अपना समाचार" का वैयक्तिक अध्ययन (बिहार के सामुदायिक टीवी चैनल अपना समाचार के विशेष संदर्भ में)	शिवेन्द्र मिश्रा	17–21
5.	आध्यात्मिक संचार का विस्तार और आधुनिक जनमाध्यम	रिन्जु राय	22–26
6.	संस्कृति, सभ्यता, मूल्य और मीडिया	डॉ गुणवन्त सोनोने	29–32
7.	जनसंचार माध्यमों द्वारा सामाजिक परिवर्तन (ओडिसा राज्य के विशेष संदर्भ में)	तेलाराम मेहेर	33–37
8.	सामुदायिक विकास की केन्द्रीय भूमिका में सामुदायिक रेडियो	अनिल कुमार पाण्डेय	38–42
9.	आध्यात्मिकता और मीडिया	प्रसाद शिवाजी जोशी	43–46
10.	भारतीय लोकतंत्र में युवाओं और मीडिया का बढ़ता वर्चस्व–सकारात्मक या नकारात्मक पहल	राहुल बुशवाहा	47–50
11.	बाजारवाद और भारतीय पत्रकारिता मूल्य	डॉ. शिखा शुक्ला	51–57
12.	भारतीय संस्कृति और साहित्य का प्रतिबिम्ब हिंदी सिनेमा	डॉ. केदारनाथ	58–65
13.	भारतीय संस्कृति और मीडिया	डॉ. अमिता	66–69
14.	सामाजिक परिवर्तन के लिए रंगमंच : माध्यम की भूमिका	डॉ. सतीश पावडे	70–72
15.	'कल्याण की अंतर्वस्तु में सन्त	डॉ. रजनीश कुमार चतुर्वेदी	73–80
16.	जनसंचार माध्यमों की लोकप्रिय संस्कृति	डॉ. संदीप कुमार	81–84
17.	आमजन को जागरूक करने में पारंपरिक संचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन	सुनीता	85–91
18.	योग के प्रति युवाओं का दृष्टिकोण	हिमानी सिंह	92–97

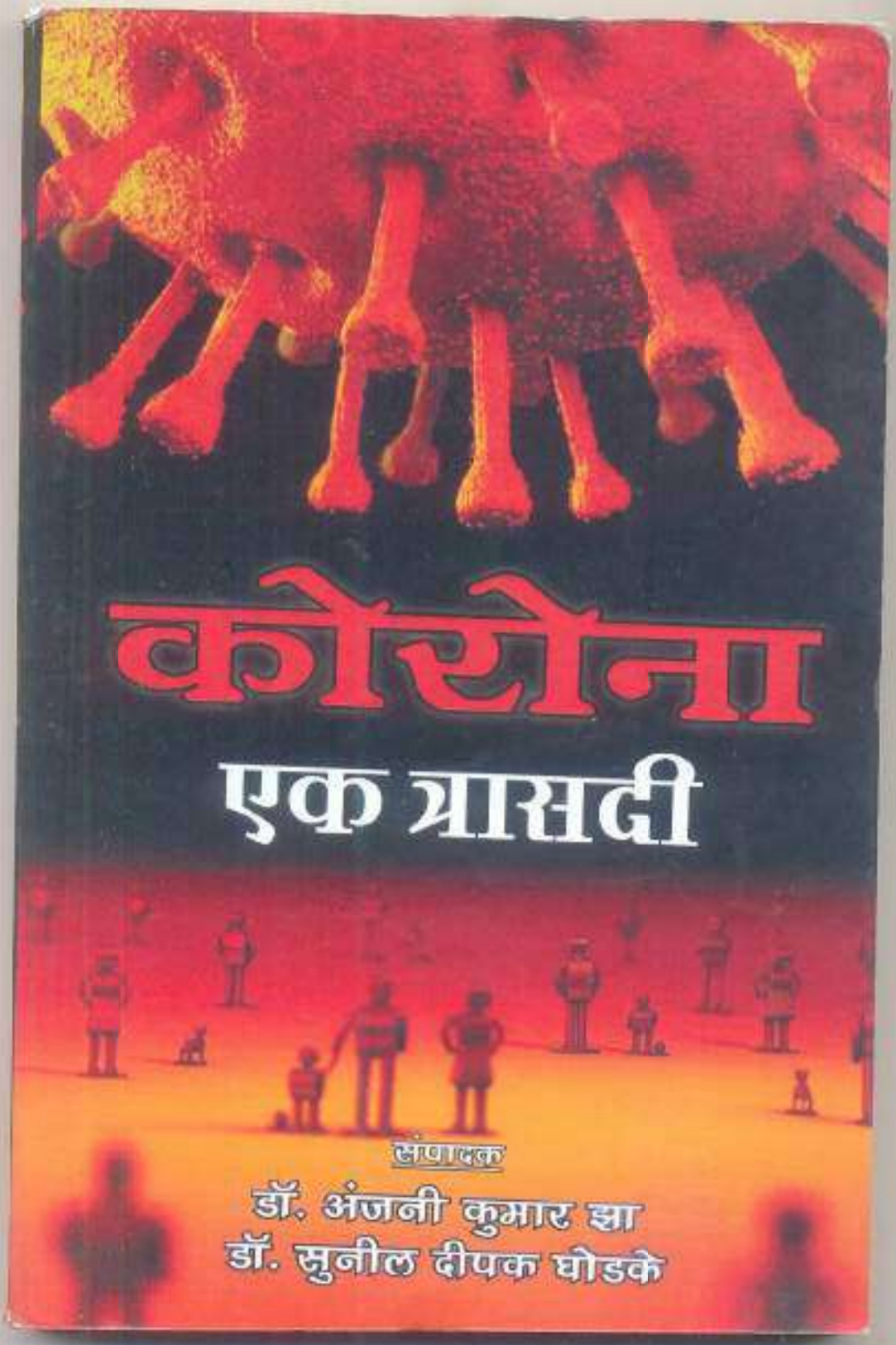
कोरोना
एक त्रासदी
संपादक
डॉ. अंजनी कुमार झा
डॉ. सुनील दीपक घोडके

ने खड़ी इस प्रकार
सका हल निकालने

जनी कुमार झा
दीपक धोडके

अनुक्रम

प्राक्कथन		*3*
कोरोना एक त्रासदपूर्ण त्रासदी	– डॉ. अंजनी कुमार झा	7
प्राथमिकता है जीवन बचाना	– डॉ. आविष्कार	12
ध्वस्त हो गयी शिक्षा व्यवस्था	– पुष्पा कँवर	20
अवसर तलाशती ऑनलाइन शिक्षा	– डॉ. परमवीर सिंह	27
ढूँढ लिए गये कई विकल्प	– राजेश लेहकपुरे	36
नई तकनीक से लाभ	– डॉ. शम्भू शरण गुप्त	44
भारत के शैक्षिणिक संस्थानों पर प्रभाव	– हर्ष कुमार	52
भारतीय सांस्कृतिक उपादेयता	– डॉ. रामशंकर	62
खिल उठा पर्यावरण	डॉ. अमिता	70
जरूरी है प्रकृति की पूजा	– डॉ. शिखा मिश्रा	78
आवश्यक है वर्तमान पर फोकस	– निलेश कुमार भगत	89
कोरोना काल में स्वस्थ रहने की चुनौतियाँ	– सचिन मौर्य	98
भयावह हो गया रोजगार का संकट	– डॉ. रमा शर्मा	103
धुंध छंटने की आशा	– उज्वल कुमार	111
राजस्थान पर्यटन उद्योग में कोरोना का प्रभाव	– शुभि दाधीच	121
कोरोना काल और परिवार	– डॉ. विकास चन्द्र	130
तनाव परिवार से होगा दूर	– अमितेश कुमार सोनकर	137
'सेवा' की राजनीति ही उचित	– ध्वनी सिंह	142
भारतीय राजनीति और आभासी मंच	– हरिओम कुमार	148

आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव

संपादक

प्रो. अनिल कुमार राय

डॉ. अख्तर आलम

(एमसीपी सामुदायिक रेडियो के कृषि कार्यक्रम के विशेष संदर्भ में)

43. धार्मिक सीरियल और सामाजिक मूल्य	बलराम बिन्द	274–279
44. पेड न्यूज और लॉबीइंग के दौर में जनमाध्यमों के सरोकार	आदित्य कुमार मिश्रा हिमांशु वाजपेयी	280–286
45. नागरिक पत्रकारिता और ग्रामीण पत्रकार	विजय कुमार कनौजिया	287–290
46. मुसहर जाति में आध्यात्मिकता, परंपरा और मीडिया का प्रभाव (बिहार के बेगूसराय जिले के विशेष संदर्भ में)	कुमारी मीरा रानी कुमारी कंचन रानी	291–295
47. कॉर्टून अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बनाम स्वच्छंदता (चार्ली एब्दो के विशेष संदर्भ में)	डॉ. आशीष द्विवेदी	296–301
48. जन-माध्यमों के सरोकार : वर्तमान पत्रकारिता	रमेश कुमार	302–306
49. स्त्री-विमर्श और मीडिया	सुनीता गुरुंग	307–310
50. लोकशक्ति और सोशल मीडिया : 21वीं सदी का एक सार्थक हस्तक्षेप	शम्भु शरण गुप्त	311–321
51. नवबौद्धों के सामाजिक विकास में मीडिया का योगदान	उमेश कुमार सिंह	322–330
52. दुकानदारों पर मीडिया के विभिन्न माध्यमों से संबंधित आदतों का अध्ययन	शिवेन्दु कुमार राय	331–337
53. आध्यात्मिक संचार के प्रतिमान	पंकज कुमार सिंह	338–344
54. मीडिया और बाजारवाद	रविंद्र सिंह	345–349
55. मीडिया संस्कृति और बाजार	नीतू थापा	350–355
56. जननायक नेता के निर्माण में हिंदी की भूमिका	श्वेता चौधरी शिवेंद्र कुमार मिश्र	356–363
57. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सोशल मीडिया	शशि गौड़	364–370
58. वैश्वीकरण, मीडिया और सामाजिक परिवर्तन	स्मृतिका मून	371–377
59. भविष्य में प्रिंट मीडिया की चुनौतियाँ	हरि प्रताप सिंह	378–381
60. कॉर्टून और मीडिया	डॉ. संदीप कुमार	382–384
61. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सरकारी हस्तक्षेप (हिंदी सिनेमा के विशेष संदर्भ में)	मनीष कुमार जैसल	385–390
62. दृश्य माध्यम की नैतिकता	डॉ. संध्या मोहिते	391–394
63. अभिव्यक्ति का विस्तार : सोशल मीडिया और वैकल्पिक मीडिया	उर्वि सिंह	395–401
64. मीडिया का बाजारीकरण और सांस्कृतिक निर्माण	श्रवण कुमार झा	402–407
65. अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम के रूप में कॉर्टून विधा	मु. अफसर अली राईनी अब्दुल कादिर सिद्दीकी	408–411
66. संस्कृति का बदलता स्वरूप और बाजारू मीडिया	डॉ. अमिता	412–415
67. वर्तमान संदर्भ में गाँधी की मूल्यपरक पत्रकारिता : एक तुलनात्मक विवेचना	देवेंद्र नाथ तिवारी महेश कुमार तिवारी	416–421

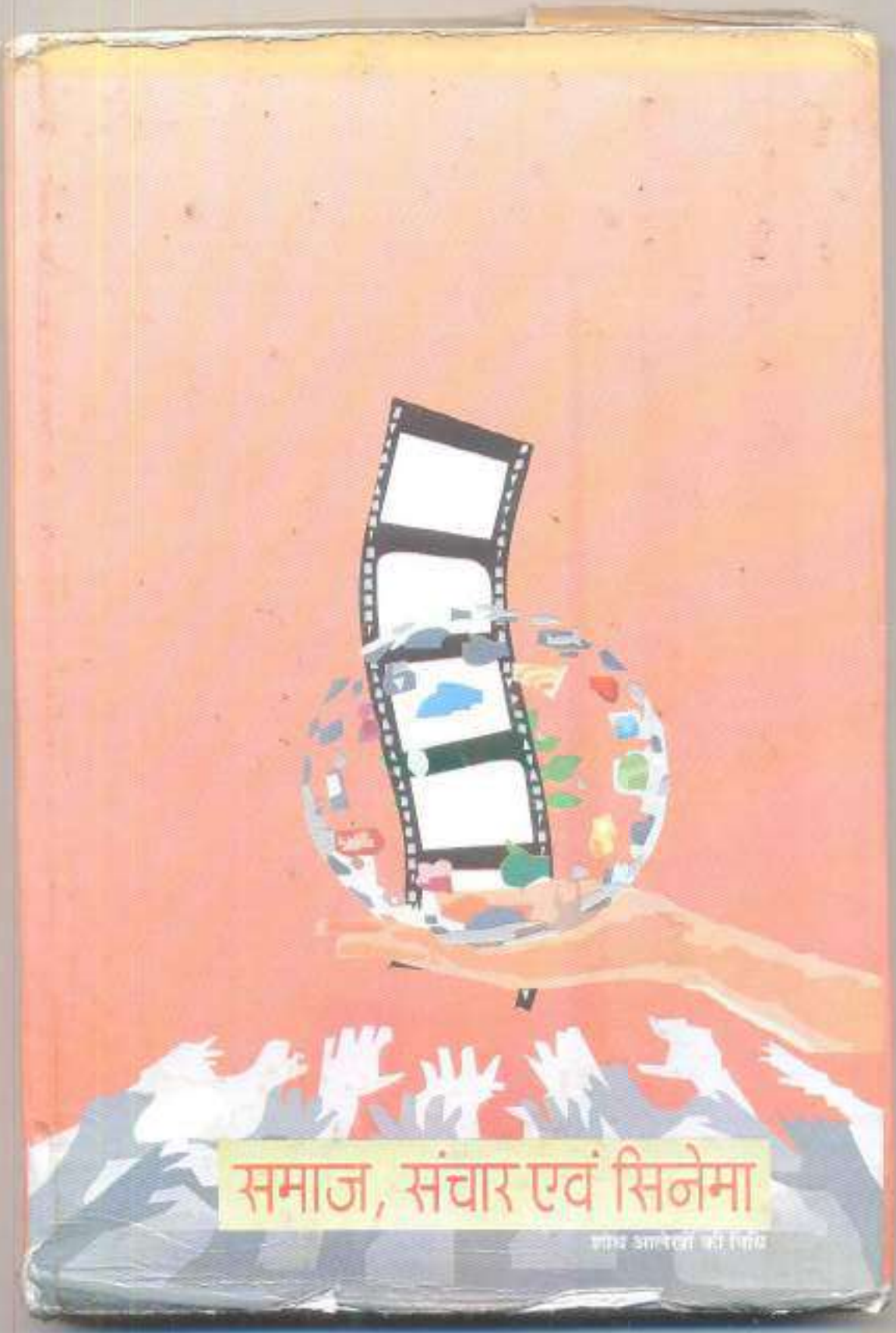

समाज, संचार एवं सिनेमा

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ
1.	साहित्य, समाज और सिनेमा -डॉ. विशाला शर्मा	9-11
2.	समाज संचार एवं सिनेमा -डॉ. इति तिवारी	12-17
3.	न्यू सोशल मीडिया तथा विश्व समाज -प्रा. डॉ. सुधीर गव्हाण	18-25
4.	मीडिया का सामाजिक उत्तरादायित्व -ऋषिकेश कुमार गौतम	26-30
5.	मूल्य-संकट के दौर में सिनेमा -डॉ. भारती गोरे	31-36
6.	पेड न्यूज का प्रभाव -सुरजीत कुमार सिंह	37-45
7.	अर्थव्यवस्था में विज्ञापनों की भूमिका -डॉ. सोनाली नरगुन्दे/-लखन रघुवंशी	46-53
8.	रेडियो प्रसारण के सामाजिक उत्तरदायित्व -गुरु सरन लाल/ -डॉ. रचना गंगवार	54-58
9.	वेब मीडिया और सोसायटी -अमिता	59-63
10.	मानवाधिकार एवं लोकतंत्र -डॉ. मनोरमा पांडे	64-68
11.	**The role of media in promoting traditional sports in Assam** -Dipendra Kumar Mazumder	69-74
12.	ग्रामीण विकास की खबरों का अध्ययन -सतेन्द्र कुमार डहेरिया	75-79
13.	हिन्दी सिनेमा में महिला सशक्तिकरण -अंकुर जैन/-अभिषेक जैन	80-90
14.	ऑस्कर और भारतीय सिनेमा -डॉ. दत्ता रत्नाकर कोल्हारे	91-95
15.	जनांदोलन में प्रिंट मीडिया की भूमिका -डॉ. अमिता	96-111

उत्तर औपनिवेशिक समय में किसान

संघर्ष के नए प्रश्न

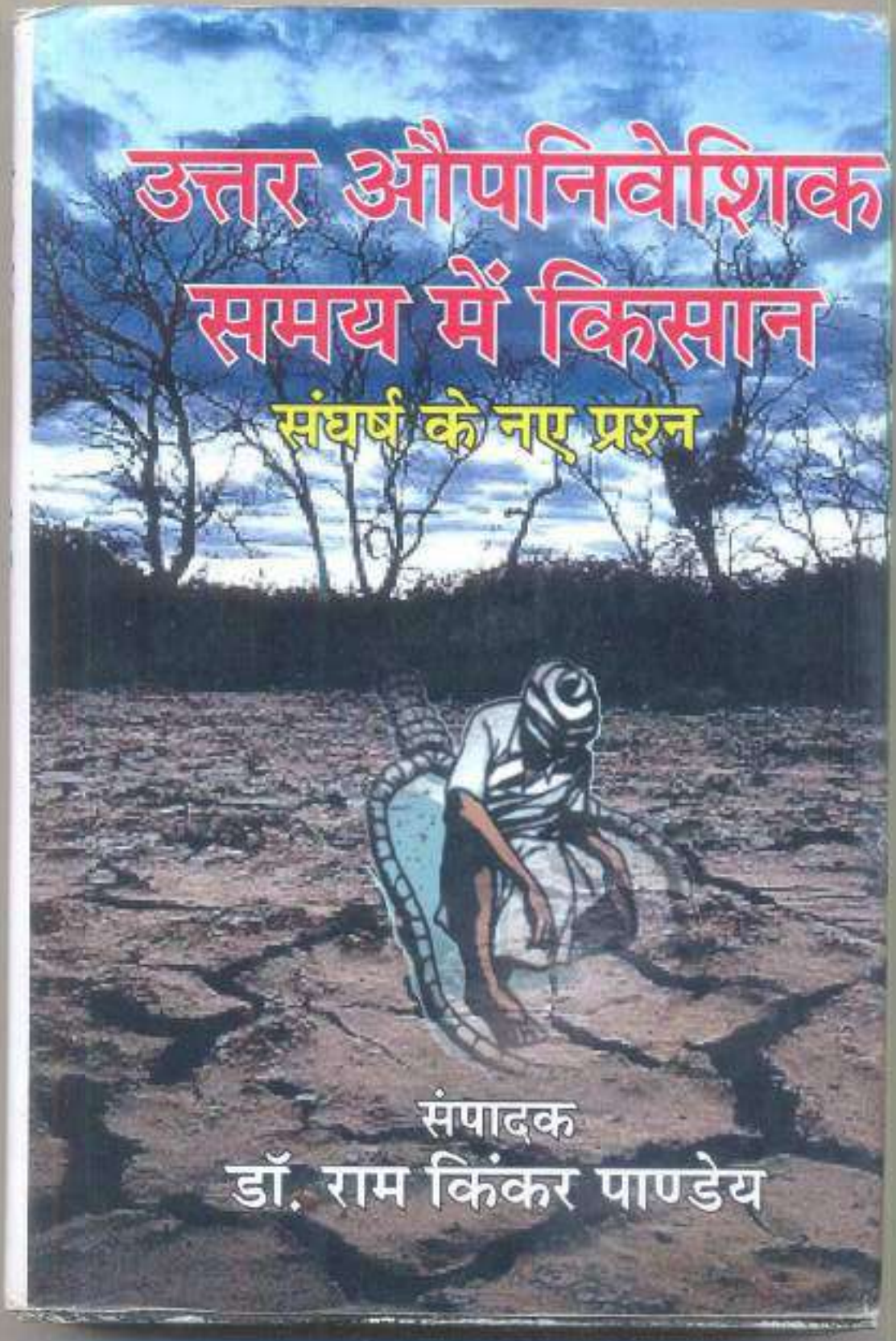

संपादक
डॉ. राम किंकर पाण्डेय

27. हिन्दी कविता और किसान जीवन 177
चन्द्रकान्त सिंह
28. किसान आत्महत्या भारत के अन्नदाता की त्रासदी या एक अपूर्ण आत्मकथा 185
डॉ. कन्हैया त्रिपाठी
29. भूमण्डलीकृत समय में किसान आन्दोलन 210
डॉ. रणजीत कुमार सिन्हा
30. टिकैत का किसान आंदोलन और 'जनसत्ता' 215
डॉ. अमिता
31. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास और भारतीय किसान 223
डॉ. अजीत कुमार द्विवेदी, अजय कुमार मिश्र
32. कृषि क्षेत्र के संकट का नवउदारवादी दृष्टिकोण 228
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
डॉ. तारनीश गौतम
33. कृषक आन्दोलन का समाज पर प्रभाव 232
डॉ. सुषमा श्रीवास्तव
शैलेन्द्र सिंह
34. भू-स्वामी, किसान या खेत मजदूर : किसान कौन ? 239
हरिचरन अहिरवार
डॉ. कृष्ण बिहारी राय
35. किसान जीवन और छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियाँ 246
डॉ. अनसूया अग्रवाल
36. ग्रामीण समाज में लोक संगीत की अर्थवत्ता (भोजपुरी के विशेष सन्दर्भ में) 253
डॉ.संध्या पाठक
37. २१ वीं सदी की चुनौतियां और भारतीय किसान (छत्तीसगढ़ के सन्दर्भ में) 260
डॉ. (श्रीमती) आनंदा गुप्ता
38. छत्तीसगढ़ में किसान आंदोलन का इतिहास 266
डॉ. फिरोज जाफर अली
39. स्वतन्त्र भारतः विकास की संकल्पना और किसान 274
डॉ. राम किंकर पाण्डेय 280
40. लेखकों के नाम पते

गणेश मंत्री

आधुनिक हिंदी पत्रकारिता के यशस्वी स्तंभ

हरिवंश

सम्पादक
डॉ. अनुपमा कुमारी

गणेश मंत्री

आधुनिक हिंदी पत्रकारिता के यशस्वी स्तंभ

हरिवंश

सम्पादक
डॉ. अनुपमा कुमारी

गणेश मंत्री
आधुनिक हिंदी पत्रकारिता के यशस्वी स्तंभ
लेखक : हरिवंश
संपादक : डॉ. अनुपमा कुमारी

लेखक ©

प्रथम संस्करण, 2021
ISBN: 978-93-92108-20-4

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक और प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है। इस पुस्तक में लेखक के अपने विचार और सामग्री है। इसका पब्लिशर से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

रूद्र पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

सी. 293ए, गली नं0 3, वेस्ट करावल नगर, नई दिल्ली- 110094
मोबाईल नं. +91-9312442975, 9873248544
ई–मेल. rudrapublishers@yahoo.com

त्री
के यशस्वी स्तंभ
विंश
ना कुमारी
©
2021
2108-20-4

ी माध्यम में प्रयोग करने के लिए
ा अनिवार्य है। इस पुस्तक में लेखक
परिवार से कोई संबंध नहीं है।

शित
डिस्ट्रीब्यूटर्स
नगर, नई दिल्ली- 110094
75, 9873248544
@yahoo.com

अपनी बात

गणेश मंत्री। समाज से सरोकार रखने वाले, सरोकार निभाने वाले, एक अनूठे पत्रकार। यशस्वी संपादक। अपने समय के सवालों को, देश, काल, परिस्थिति और चुनौतियों को दस्तावेज का रूप देने वाले एक महान लेखक। राजनीति के गहरे अध्येता और विश्लेषक। सत्ता और सियासत की राजनीति की संभावनाओं को नजर अंदाज कर समाज निर्माण के लिए राजनीति में समाजवादी विचारों को आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाने वाले राजनीतिक कार्यकर्ता व देसज तरीके से मौलिक सवालों पर विचार करने वाले चिंतक, विचारक।

मंत्रीजी का इतना परिचय पानी में तैरते ग्लेशियर की तरह है। पानी में तैरते हुए बर्फ का बड़ा हिस्सा, उतना ही दिखाई देता है, जितना कि वह ऊपर तैर रहा होता है, लेकिन हकीकत ये है कि पानी के अंदर का हिस्सा, ऊपर से कहीं अधिक पानी में डूबा हुआ होता है। गणेश मंत्रीजी के व्यक्तित्व– कृतित्व के विविध आयामों का परिचय देने के साथ–साथ यह बताना जरूरी है कि वह अपने कृतित्व तथा कर्मयोग के द्वारा अपने करीबियों के मानस में ताजगी और जीवंतता के व्यक्तित्व की वजह से ज्यादा रचे–बसे हुए हैं। वह यारों के यार थे और कथनी–करनी में एकरूपता रखने वाले दृढ़ चरित्रवाले इंसान।

गणेश मंत्री का जन्म 08 दिसंबर, 1938 को, राजस्थान के कोटा शहर में हुआ था। टाइम्स ऑफ इंडिया समूह में ट्रेनी जर्नलिस्ट के तौर पर उन्होंने कैरियर की शुरुआत की और फिर उसी समूह की मशहूर हिंदी पत्रिका धर्मयुग के प्रधान संपादक बने। उन्होंने समाजशास्त्र की पढ़ाई की थी और कानून की भी। कुछ समय तक वकालत भी की और ट्रेड यूनियनों से भी जुड़े रहे।

धर्मयुग में तो वह काम करते ही थे, पर उनके पास लिखने को इतना कुछ होता था कि वह नाम बदलकर दूसरे संस्थानों में भी लिखते थे। मशहूर पत्रिका रविवार और चौथी दुनिया में वो, 'गजानन चिटणिस' के नाम से लेखन करते थे। गजानन यानी गणेश और चिटणिस यानी मराठी में मंत्री।

गणेश मंत्री की पत्रकारिता को जानना– समझना हो तो धर्मयुग में उनके लेखों को पढ़ सकते हैं या फिर उन पत्रकारों को, जिनकी उन्होंने मेंटरिंग की और पत्रकार बनाया। यदि पत्रकारिता को बड़े कैनवास पर समझना हो तो गोवा मुक्ति संग्राम पर या गांधी और अंबेडकर पर लिखी गयी उनकी पुस्तक से इसे समझा जा सकता है कि वह कितनी गहराई से राजनीतिक विषयों को समझते थे और देखते थे, आंकते थे और दर्ज करते थे।

हरिवंश हिंदी के वरिष्ठ पत्रकार व लेखक हरिवंश (वर्तमान में राज्यसभा के उपसभापति) करीब चार दशक तक सक्रिय पत्रकारिता में रहे हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया समूह की लोकप्रिय हिंदी पत्रिका 'धर्मयुग' से पत्रकारिता की शुरुआत की फिर आनंद बाजार पत्रिका समूह की प्रसिद्ध हिंदी समाचार पत्रिका 'रविवार' से जुड़े। उसके बाद दक्षिण बिहार (अब झारखंड) के रांची से प्रकाशित होनेवाले हिंदी अखबार 'प्रभात खबर' से जुड़े। इस अखबार में वे करीब तीन दशक तक प्रधान संपादक रहे. एक मृतप्राय अखबार को उन्होंने न सिर्फ तीन राज्यों झारखंड,बिहार,बंगाल में अपार विस्तार दिया, बल्कि प्रभात खबर को सरोकारी और सार्थक पत्रकारिता का एक मॉडल अखबार बनाया। बतौर संपादक, हरिवंश की गिनती हिंदी के उन गिने-चुने यशस्वी और कुशल संपादकों में होती है, जिन्होंने प्रयोगधर्मिता, सरोकार और लेखन से एक नयी धारा विकसित की। पत्रकारिता के आरंभिक दिनों से ही बतौर पत्रकार, हरिवंश को गढ़ने में गणेश मंत्री की अहम भूमिका रही इस पुस्तक में हरिवंश ने एक लंबे संस्मरणात्मक लेख के जरिये गणेश मंत्री के व्यक्तित्व,कृतित्व के विविध आयामों को उभारा है। इस उभार का विस्तार इतना व्यापक है कि यह निजी संस्मरण भर के दायरे में नहीं बंधता बल्कि गणेश मंत्री के बहाने तब की, अब की और भविष्य की पत्रकारिता की पड़ताल भी करता है।

डॉ. अनुपमा कुमारी

• रांची में जन्मी, पली, बढ़ी. करीब डेढ़ दशक तक सक्रिय और सरोकारी पत्रकारिता में रहीं। इस दौरान प्रभात खबर (हिंदी दैनिक), सेवेन डेज (साप्ताहिक अखबार), गणादेश (अखबार), तहलका (हिंदी पत्रिका) के साथ पत्रकारिता करते हुए जमीनी रिपोर्ट, रिपोर्ताज और विशेष फीचर लेखन से हिंदी पत्रकारिता में पहचान बनी।

• पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट काम के लिए देश-दुनिया के कई प्रतिष्ठित फेलोशिप मिले। इनमें तीन बार सीएसई (सेंटर फॉर साइंस एंड इनवायरमेंट) मीडिया फेलोशिप, नेशनल फाउंडेशन आफ इंडिया मीडिया फेलोशिप, प्रभा दत्त मेमोरियल मीडिया फेलोशिप, रीच लिली एमडीआर मीडिया फेलोशिप, पैनोस साउथ एशिया मीडिया फेलोशिप, झारखंड सरकार का मीडिया फेलोशिप आदि प्रमुख हैं।

• पत्रकारिता के क्षेत्र में उपलब्धियों के लिए कई राष्ट्रीय स्तर के सम्मान और पुरस्कार मिले, जिनमें रीच लिली एमडीआर टीबी अवार्ड, झारखंड सरकार का उत्कृष्ट पत्रकारिता पुरस्कार, विक्रमशीला विद्यापीठ द्वारा पत्रकारिता शिरोमणि पुरस्कार, आचार्य लक्ष्मीकांत वाजपेयी पत्रकारिता सम्मान, अखिल विश्व भोजपुरी विकास मंच द्वारा लोकरत्न सम्मान, पीआरएसआई द्वारा जनसंपर्क में उल्लेखनीय योगदान सम्मान आदि प्रमुख हैं।

• साइंस से पोस्ट ग्रेजुएट हैं। रांची विश्वविद्यालय से एलएलबी व पत्रकारिता में पोस्ट ग्रेजुएट हुईं। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से पत्रकारिता में ही डॉक्टरेट की।

• मीडिया एंड कम्युनिकेशन विषय के प्राध्यापक के रूप में गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय (बिलासपुर) से पहले रांची विश्वविद्यालय (रांची), मगध विश्वविद्यालय (बोधगया), संत थॉमस कॉलेज (भिलाई), पंडित सुंदर लाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय (बिलासपुर) में अध्यापन कर चुकी हैं।

• पत्रकारिता, मीडिया, साहित्य, भाषा, समाजविज्ञान, सिनेमा, कला आदि विषयों पर 50 से अधिक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में व्याख्यान देने या रिसर्च पेपर प्रस्तुत करने का अनुभव है। मीडिया के विविध आयाम पर अब तक 20 रिसर्च पेपर प्रतिष्ठित जर्नल में प्रकाशित हुए हैं।

संपर्क डॉ. अनुपमा कुमारी सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

RUDRA

Also Available on amazon Flipkart

ISBN: 978-93-92108-20-4

9 789392 108204

₹ 395

रूद्र पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

सी-293 ए, गली नं० 3, पश्चिम करावल नगर, नई दिल्ली-110094

मोबाईल- 9312442975

ई-मेल: rudrapublishers@yahoo.com

सोशल मीडिया के सामाजिक सरोकार

(Social concern of Social media)

डॉ0 सतीश चन्द्र जैसल
डॉ0 साधना श्रीवास्तव

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सोशल मीडिया के सामाजिक सरोकार

(Social concern of Social media)

डॉ0 सतीश चन्द्र जैसल
डॉ0 साधना श्रीवास्तव

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सोशल मीडिया के सामाजिक सरोकार
(Social concern of social media)

सम्पादक : डॉ० सतीश चन्द जैसल एवं डॉ० साधना श्रीवास्तव

ISBN : 978-93-87492-00-4

प्रथम संस्करण : 2017

Price : 450/-

Copyright © U P Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced. Stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Publisher.

Disclaimer: The ideas and views given as an articles and papers in present edited book, are of their authors own. Editors and the Publisher are not responsible for any of their statements.

Published by :
Reflections Printers & Publishers
Aligarh-202002

22.	"सोशल मीडिया से समाज सेवा : मिनीमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण" *दीपक राय*	179
23.	ग्रामीण विकास में सोशल मीडिया की भूमिका *राघवेन्द्र दीक्षित*	191
24.	सोशल मीडिया एंव सामाजिक दायित्व *शुभम सिंह*	201
25.	जनमत निर्माण में मीडिया की भूमिका का आलोचनात्मक विश्लेषणः– सोशल मीडिया के विशेश संदर्भ में *प्राची वर्मा*	204
26.	सोशल मीडिया और पोलिटिकल कैम्पेन *डॉ अनुपमा कुमारी*	215
27.	मीडिया : कल, आज और कल *डॉ योगेन्द्र कुमार पाण्डेय*	220
28.	सोशल मीडिया और हमारा सामाजिक ताना–बाना *डॉ धनंजय चोपड़ा*	229
29.	**Effects of Social Media on Organizational Culture** *Dr. Gyan Prakash Yadav*	235
30.	**Social Media in Distance Education** *Dr. Dinesh Singh*	245
31.	***Social Media as a Teaching and Learning Tool*** *Dr. Saroj Yadav*	253
32.	**Issues and Challenges of Social Media** **Dr. Prabha Shanker Mishra** *Dr. Prabha Shanker Mishra*	261

सोशल मीडिया और पोलिटिकल कैम्पेन

*डॉ. अनुपमा कुमारी

सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से सामाजिक जीवन में संवाद के नए रूप की शुरुआत हुई है. इसने समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों को परस्पर संवाद स्थापित करने, विविध विषयों पर वैचारिक अभिव्यक्ति, भावनाओं के आदान–प्रदान और अकादमिक, साहित्यिक, राजनीतिक और सामाजिक विमर्श के लिए मंच प्रदान किया है. आधुनिक युग में सोशल मीडिया केवल मनोरंजन का ही माध्यम नहीं है बल्कि समाचारों का आदान–प्रदान करते हुई इसने कई जन–आंदोलन भी खड़े किए हैं. दिल्ली के निर्भया कांड, मुजफ्फरनगर का दंगा, समाजसेवी अन्ना हजारे का आंदोलन इसके कुछ महत्वपूर्ण उदहारण हैं. सोशल मीडिया के माध्यम से समसामयिक मुद्दों और घटनाओं को भी प्रमुखता से उठाया जा रहा है. राजनीतिक दृष्टि से देखें तो भारत के वर्ष 2014 में हुए लोकसभा चुनाव में भी सोशल मीडिया की भूमिका अहम् रही। बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की 1.25 अरब जनसंख्या में से लगभग 70 करोड़ लोगों के पास फोन है और इनमें से 25 करोड़ लोगों की जेब में स्मार्टफोन है. आंकड़ों की नजर से देखें तो 15.5 करोड़ लोग हर महीने फेसबुक चलाते हैं और 16 करोड़ लोग हर महीने व्हाट्सऐप पर रहते हैं. इन आंकड़ों से यह समझना आसान है कि राजनातिक पार्टियां अब ऑनलाइन कैंपेन या पोलिटिकल कैंपेन में सोशल मीडिया का इस्तेमाल क्यों कर रही हैं?

सोशल मीडिया का इतिहास

सोशल मीडिया का जन्म वर्ष 1995 में माना जाता है. उस वक्त क्लासमेट्स डॉट कॉम नाम से एक साइट शुरू की गयी थी जिसके जरिये स्कूलों, कॉलेजों, कार्यक्षेत्रों और मिलिट्री के लोग एक दूसरे से जुड़ सकते थे. यह साइट अब भी सक्रिय है. इसके बाद वर्ष 1996 में बोल्ट डॉट कॉम नाम की सोशल साइट बनायी गयी. वर्ष 1997 में एशियन एवेन्यू नाम की एक साइट शुरू की गयी थी एशियाई–अमरीकी कम्यूनिटी के लिए. सोशल मीडिया के क्षेत्र में सबसे बड़ा बदलाव आया फेसबुक और ट्वीटर के आने से. फेसबुक का जन्म 4 फरवरी,2004 में हुआ. मार्क जुकरबर्ग ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए फेसबुक

मूल्यानुगत मीडिया के मायने

आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव

संपादक
प्रो. अनिल कुमार राय
डॉ. अख़्तर आलम

ISBN : 978-93-85144-77-6

© प्रो. अनिल कुमार राय

ई–मेल : raianilankit@gmail.com

प्रकाशक : शिवालिक प्रकाशन

27/16, शक्ति नगर, दिल्ली–110007

फोन नं – 011–42351161

प्रकाशन वर्ष : 2016

संस्करण : प्रथम

प्रकाशन सहयोग : भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय मीडिया संगोष्ठी "आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव" के आयोजन के लिये प्राप्त सहयोग धनराशि के प्रावधान के तहत प्रकाशित।

मुद्रक : गुरुकृपा क्रियेशन

रामाकृष्णा हॉटेल के पीछे मेन रोड वर्धा महाराष्ट्र

मो. 8888993996

नोट : पुस्तक में संकलित आलेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

. In Lawrence LeDuc, Richard G Niemi,
es in the Study of Elections and Voting

of the debates between Republicans and
http://www.uab.ro/jolie/2010/4_eshidi-

: November 06, 2015
CDO_Obama.pdf' Retrieved: November

?analysis.pdf' Retrieved: November 06,

20discourse%20analysis.pdf' Retrieved:

airclough-Norman-Critical-Discourse-
nber 09, 2015
issue%202,%202012/paper/Paper-12.pdf

-introspect-on-five-important-issues-at-
5
ge-modi-takes-dig-at-lalus-remarks-on-
ember 09, 2015
-modi-for-losing-control-over-language-

odder-scam-manjhi-owaisi-seemanchal-
09, 2015
ech-examination Retrieved: November

bama-15-a-hate-speech-examination/

मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी

65

गांधी की दृष्टि में गीता

*डॉ. अख्तार आलम **अनुपमा कुमारी

भूमिका

महात्मा गांधी ऐसे महामानव हुए जिन्होंने न केवल देश की राजनैतिक दिशा बदली बल्कि संपूर्ण विश्व को सत्य, अहिंसा, शांति और प्रेम का पाठ पढ़ाया। गांधी ने भी वही राह अपनाई थी जो ईसा मसीह या गौतम बुद्ध ने अपनाया था। इन सब ने विश्व को एक नयी दिशा दी। उनका धर्म समूची मानव–जाति के लिए एक प्रेरणा स्रोत रहा है। उनके लिए जीवन में सत्य से बढ़कर कोई धर्म और अहिंसा से बढ़कर कोई कर्तव्य नहीं था। वे हिन्दू धर्म के धार्मिक ग्रंथ गीता से अति प्रभावित थे। वे कहते थे कि मानव जीवन ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय है और गीता में सभी समस्याओं का समाधान निहित है। यदि स्वाध्याय पूर्वक गीता अध्ययन किया जाए और समझने की कोशिश की जाए तो यह जीवन के सभी गूढ़ रहस्यों को उजागर करती है। वे गीता को जीवन का सार तत्त्व मानते थे साथ ही इसे वेदों का निचोड़ भी कहते थे। उनका मानना था कि जिस भी व्यक्ति ने गीता को जीवन में उतार लिया उसे जीवन में कभी निराशा नहीं घेर सकती।[a] यह सकारात्मकता का संचार करती है और जीवन जीने को प्रेरित करती है। जिस तरह माँ अपने बच्चों को कष्ट से उबार लेती है गीता भी उसी तरह कष्टों से उबार लेती है। इसीलिए उन्होंने गीता को 'माँ' की संज्ञा दे दी और हमेशा गीता को 'गीता माता' कहते रहे।

की– वर्ड्स : गांधी, गीता, सत्य, अहिंसा, अस्पृश्यता, प्रायश्चित, स्वाध्याय, शांति आदि।

शोध प्रविधि : विश्लेषणात्मक अध्ययन व साहित्य पुनरावलोकन

गीता परिचय :

महाभारत एक ऐतिहासिक महाग्रंथ है। महाभारत और रामायण को सिर्फ ऐतिहासिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि धार्मिक ग्रंथ के रूप में भी माना गया है। महाभारत और रामायण दोनों में देव और असुर के बीच सत्य–असत्य, नैतिकता–अनैतिकता आदि के संवाद और उनके बीच चली लड़ाई का वर्णन है। गीता, महाभारत का 18वां अध्याय है, जिसमें 700 श्लोक हैं और यह कृष्ण–अर्जुन के बीच का संवाद है। इस संवाद का वर्णन संजय, नेत्रहीन धृतराष्ट्र से कर रहे हैं और धृतराष्ट्र संजय से पूछते हैं धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्र हुए मेरे पुत्र और पांडु के बीच क्या हो रहा है। गीता के प्रथम अध्याय का पहला श्लोक यही बताता है–धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।।

वैसे गीता का शाब्दिक अर्थ है 'गाया गया'। इसमें 'उपनिषद्' अध्याहार है। यानि कि गाया गया उपनिषद्। उपनिषद् का अर्थ है ज्ञान–बोध। अर्थात् गीता का अर्थ हुआ श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया हुआ बोध। यह बोध इतना प्रभावी माना गया कि गीता सिर्फ भारत ही नहीं दुनिया भर को नई दिशा देने वाला ग्रंथ है। हालांकि गीता में एक खास धर्म के लोगों की गहरी आस्था है लेकिन यह समूचे मानव जाति के लिए दिव्य प्रेरणा है। भागवत गीता में अध्यात्म का सजग प्रहरी होने के साथ–साथ व्यावहारिक–व्यापारिक, सामाजिक–सांस्कृतिक,

---

[illegible]

- Famous Reflections on the Bhagavad Gita
- http://www-bhagavad&gita-us-
- Self&Control] the Key to Self&Realisation
- http://www-eng-vedanta-ru/

***Dr.Akhtar Alam, Asst- professor, Jansanchaar Vibhag, M.G.A.H.V, Wardha-442005 Maharashtra**

****Anupama Kumari, Research Scholar, Jansanchaar Vibhag, M.G.A.H.V, Wardha-442005 Maharashtra**

संचार शब्द संस्कृत के
है। चलना अथवा आगे बढ़ना
सम्यक रुप से चलना या बढ़ना
शब्द का पर्याय है। जो लैटिन
संदेश एक व्यक्ति में दूसरे व्य
की पूर्ति करता है। संचार माध्य
भी संचार के लिए किया जाता
संचार प्रेरक का कार्य किए
जानकर सांस्कृतिक विकास कि
इन्हें अब भूल रहे हैं। थोड़ा इन

संचार का कार्य :

संचार किसी भी व्यक्ति एवं
एक गतिशील प्रक्रिया है जो एक
एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से ए
से जोड़ना संचार का कार्य है
निस्सन्देह संचार का महत्त्व मौलिक
विशेष पर होता है। संचार केवल
प्रसार और प्रचार किया जा सकता है

जैसे:–
विवाह के पुण्य पर्व पर, शा
अहीर वंशी गौरव फिर पाए
दान,दहेज बिन बेटी ब्याहे,
खुशी खुशी माता पिता
आओ हम आप सब मिलक
गीता का संदेश, कृष्ण के

सूचना एवं जानकारी देना :

सामाजिक चेतना एवं जनजा
जाता है। जैसे किसी विषय पर
ध्यानकर्षित कर उन्हें जागृत किया
इसकी की ओर ध्यान आकर्षित क

ग्रामीण समाज और संचार

बदलते आयाम

संपादक
डॉ. निर्मला सिंह व ऋषि गौतम

ग्रामीण समाज और संचार
बदलते आयाम

AMS PUBLICATION
E-6, Sai Vihar Colony, Kishanganj, Mhow
Dist. INDORE (M.P.) PIN Code:453441
(M) 08602275446, 08602550091
E-mail-amspublication2016@gmail.com.

संपादक
डॉ. निर्मला सिंह व ऋषि गौतम

रिगी पब्लिकेशन

15-16 जनवरी 2016 को कस्तूरबाग्राम रूरल इंस्टीट्यूट, इंदौर, आवाज मीडिया स्टडीज, इंदौर एक्सपोज सिटी, इंदौर, मूल्यानुगत मीडिया, इंदौर और समागम, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोधपत्रों का संकलन।

RIGI PUBLICATION
All right reserved
No part of this book may be reproduced in any form, by Photostat, microfilm, xerography, or any other means or incorporated into any information retrieval system, electronic or mechanical, without the written permission of the copyright owner.
Originally published in the India

ग्रामीण समाज और संचार : बदलते आयाम

ISBN : 978-93-84314-65-1

प्रकाशन वर्ष : अप्रैल, 2016

संस्करण : प्रथम

© : ऋषि गौतम

प्रकाशक : रिगी पब्लिकेशन
777, स्ट्रीट नं. 9, कृष्णा नगर,
खन्ना-141401 (पंजाब), इंडिया

लेआउट-डिजाइन : नितिन पंजाबी

मूल्य : रु. 499/-

हिन्दुस्तान की सभ्यता औ
भारतीय अर्थव्यवस्था ग्रामीण क्षेत्रों
क्षेत्र के विकास से ही जुड़ी है, इस
योजनाओं में ग्रामीण विकास से
वित्तीय सहायता की विभिन्न योज
अवसर प्राप्त हों। ग्रामीणों के जीव
बुनियादी आवश्यकताओं के लिए
विकास कार्यक्रमों में समाजसेवकों
भूमिका निभाई है।

वैश्वीकरण के पश्चात् वि
तथा समाज के हर वर्ग को प्रभा
जनमाध्यमों ने एक नवीन सूचना
जंजाल में आज भी आवश्यकता
आवश्यकता पूर्ण करने के साथ
ग्रामीण जीवन पर प्रकाश डालने
प्रासंगिक है जितनी आजादी के पू
लिए तकनीकी क्षेत्रों के विस्तार
समाज को मिला है, परंतु प्रश्न
संचार कर रहे हैं?

जब हम भारत के विका
पर सूक्ष्म दृष्टि डालने की आवश्य
मार्गों तक ही तो सीमित नहीं क
सांस्कृतिक तथा विकासात्मक परि
किया गया।

हम आभारी है शासी निका
के आयोजन की अनुमति प्रदान
हैं कि स्वचित्त से यह संगोष्ठी सम्
हैं कि उन्होंने पूर्ण विश्वास और
साथियों को धन्यवाद प्रेषित करते

शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र, वि
अति आवश्यक है अन्यथा भारत
चिंतन के पूर्व हमें यह अवश्य
बाद ''मेक इन इंडिया'' का नारा

ग्रामीण संचार के सरोकार और प्रासंगिकता
(विशेष संदर्भ : लोक संचार माध्यम)

● अनुपमा कुमारी
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

पारंपरिक लोक माध्यम या ग्रामीण लोक संचार के जन्म की तिथि सुनिश्चित नहीं है। मनुष्य अपने प्रारंभिक दिनों से ही अपनी इच्छाओं, संवेगों-भावनाओं एवं आवश्यकताओं को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए हाव-भाव, संकेतों आदि का प्रयोग करता रहा है, जिसने कालान्तर में भाषा का रूप लिया। भाषा ने ही मानव के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को संभव बनाया। यह सर्वविदित है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और संचार के बिना वह जीवित नहीं रह सकता। संचार के उद्देश्य असीमित हैं परिवार, समाज एवं समूह में स्थितिनुसार संचार करते हैं। विचारों, सूचनाओं, भावनाओं के निरन्तर अभिव्यक्ति से ही हमारे समग्र जीवन मूल्यों और संस्कृति की संरचना होती है। सूचना की भूख एवं संचार से जनसंचार के असीमित संदेश प्रवाह के कारण दूसरों तक संदेश पहुंचाने के अनेक आधुनिक साधनों का विकास मानव ने कर लिया है लेकिन आज भी संचार का लोक माध्यम या ग्रामीण संचार सबसे प्रभावी माध्यम है। इन माध्यमों के जरिए पढ़े-लिखे, अनपढ़ सभी तक सार्थक एवं प्रभावी ढंग से संदेश पहुंचाया जा सकता है। इन माध्यमों में प्रमुख हैं नाटक, कठपुतली, कथा, वार्ता, संगीत, लोक संगीत, पर्यटन, यात्रा वृत्तांत, नाटक आदि।

शोध प्रविधि

अवलोकन व अंतर्वस्तु विश्लेषण

लोक संचार की खासियत

लोक संचार की खासियत है कि वह सामूहिकता का बोध कराता है।

इसमें समूह की संस्कृति, भाषा, परिवेश और रुचि के अनुसार ही संदेशों का सम्प्रेषण किया जाता है। हालांकि पहले यह दायरा छोटा था लेकिन समय के साथ इसका विस्तार होता गया। आधुनिक संचार प्रणाली ने इसे काफी व्यापक फलक प्रदान किया है। लेकिन लोक संचार माध्यम हमेशा से महत्वपूर्ण रहे। बदलते परिवेश में भी लोक संचार माध्यमों मसलन लोकनृत्य, लोक कथा, लोक गीत आदि ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आज भी खास कर गांवों में जागरूकता फैलाने के लिए इन्हीं का प्रयोग किया जाता है।

प्रिंट से लेकर इलेक्ट्रॉनिक और फिर आधुनिक तकनीकी माध्यमों का विस्तार हुआ है। हर गाँव और लगभग हर व्यक्ति तक संचार के माध्यमों की पहुँच बन गयी है, तो उनकी जिम्मेदारी भी बढ़ गयी है। इनका काम मनोरंजन करने के साथ साथ गांवों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति और समस्याओं को दूर करना भी है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण पहलू ये है कि बदलाव तो हो परंतु गाँव की खुशबू, उसकी संस्कृति, परम्परा बनी रहे। भारतीय लोकसंस्कृति में कृषि, अर्थशास्त्र, साहित्य, कला, नृत्य, संगीत सब शामिल है।

ग्रामीण लोक संचार के माध्यम व उपयोग

ग्रामीण लोक संचार के माध्यमों में मूर्ति कला, शिलालेख, भजन, कीर्तन, रामलीला, रासलीला, नाटक, नौटंकी, कठपुतली आदि शामिल हैं। ये सदियों से हमारी संस्कृति में रचे बसे हैं, इसी कारण सरकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार, जागरूकता अभियानों आदि में इनकी मदद ली जाती है। ग्रामीण लोक संचार की सबसे बड़ी खासियत होती है कि यह माध्यम ग्रामीणों की जीवनशैली से मेल खाते हैं और कोई व्याकरण या साहित्य न होने के बावजूद इनका विकास मौखिक या क्रियागत स्रोतों के माध्यम से होता रहता है। आज आधुनिक तकनीकी माध्यमों का विकास हुआ है लेकिन इसके बावजूद लोक संचार के माध्यमों का प्रभाव कम नहीं हुआ है। लोकगीत जैसे कजरी, बिरहा, चैती, निर्गुण आदि लोकनृत्य जैसे भांगड़ा, भरतनाट्यम, गरबा। लोकवाद्य जैसे शहनाई, सितार, तबला आदि लोक सम्मेलन जैसे मेला, हाट, बाजार, उत्सव आदि, लोककलाएं जैसे चित्रकारी, कसीदाकारी आदि एवं लोकनाट्य जैसे रामलीला, रासलीला आदि सभी लोक संचार के माध्यम हैं और ग्रामीणों के करीब होने के कारण इन्हें ग्रामीण लोक संचार माध्यम भी कहा जाता है।

शिलालेख : ग्रामीण लोक संचार के माध्यमों में शिलालेख बहुत ही सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया। शिलालेख का निर्माण भाषा के विकास से हुआ लेकिन इससे अभिव्यक्ति को स्थायित्व मिला। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो कई राजाओं ने, यहाँ तक कि सम्राट अशोक ने अपनी प्रजा को सूचनाएं एवं दिशा-निर्देश के लिए शिलालेखों का प्रयोग किया था। सम्राट अशोक ने तो भारत के विभिन्न स्थानों पर प्रचलित विभिन्न भाषाओं में शिलालेख खुदवाये थे।

चित्रकला : चित्रकला मानव की अभिव्यक्ति की प्राचीन कला है। भाषा के विकास से पहले मनुष्य अपनी भावनाओं को चित्रों के माध्यम से उकेरता था। सूचनाओं को संरक्षित करने की पहली कोशिश इसी माध्यम ने की। पाषाणकालीन युग की गुफाओं में अंकित गुफा चित्र इसके प्रमाण हैं। भारतीय चित्रकला का इतिहास शिला-चित्रों से शुरू होकर आधुनिक युग में कम्प्यूटर चित्रों तक का है। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि स्थानों पर खुदाई में प्राप्त हुई वस्तुओं पर अंकित चित्रों से भारतीय चित्रकला की प्राचीनता का बोध होता है।

लोकनृत्य : लोकनृत्य मानव जीवन के प्रारम्भिक समय से जुड़ा हुआ है। लोगों के मनोरंजन के सशक्त माध्यमों में लोकनृत्य का पहला स्थान है। लोकनृत्य मनुष्य और प्रकृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है। लोकनृत्य उल्लासपूर्ण भावाभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। मानव के जीवन में जब खुशी के क्षण आते हैं तो अकेले अथवा समूह में प्राकृतिक रूप से पैर थिरकने लगते हैं। आज भी विभिन्न अवसरों पर नृत्यों का आयोजन होता है। लोक नृत्य में अलग-अलग जातियों समुदाय आदि की सांस्कृतिक झलक मिलती है।

मूर्तिकला : मूर्तिकला में संवेदनाओं को चित्रित किया जाता है। मूर्तिकला का विस्तार समय और तकनीक के साथ-साथ बढ़ता गया। हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा ने मूर्तिकला को भारत में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मूर्ति निर्माण मिट्टी, पत्थर, धातु या लकड़ी द्वारा किया जाता है। भारतीय मूर्तिकला को पूरे विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त है। विभिन्न कालखंडों में अलग-अलग शैलियों का विकास हुआ।

श्रव्य ग्रामीण लोक संचार के माध्यम

श्रव्य ग्रामीण लोक संचार के माध्यमों में लोकगीत, लोक कथा, कहानी आदि शामिल हैं। लोक संचार में परम्परागत श्रव्य संचार माध्यम की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। ज्ञान का संचार भी इसी माध्यम की देन है।

लोकगीत : लोकगीत लोक के गीत होते हैं। यह किसी एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरे समाज का होता है। यह लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित होता है। इसका रचनाकार अपने व्यक्तित्व को लोक में ही समर्पित कर देता है। 'लोकगीत मानव हृदय की वह नैसर्गिक अभिव्यक्ति है, जिसमें भाव, भाषा और छन्द की नियमितता से मुक्त होकर स्वच्छन्द रूप से निःसृत होने लगते हैं।' हमारे समाज में लोकगीतों की लंबी परम्परा है। कुछ लोकगीत बार-बार प्रयोग होने के कारण आज भी विद्यमान है और कुछ लुप्त हो गए। सामाजिक चेतना व व्यवहार के परिवर्तन के साथ लोकगीतों में समय-समय पर परिवर्तन हुआ है। लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। लोकगीतों में गज़ब की मिठास होती है। गाँवों में लोकगीत हर क्षण गाए और गुनगुनाए जाते रहे हैं।

गाँव में खासकर श्रमिकों से लोकगीतों का गहरा संबंध है। ये हल चलाते, बीज बोते समय, फसल की बुआई-कटाई आदि के समय भी गीत गाते हैं। जिससे उनका मनोरंजन भी होता है और ऊर्जा का संचार भी। जन्म संस्कार के समय सोहर गाने की परम्परा बहुत ही पुरानी है। लोकगीतों का लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ता है यह लोक गीत जादू-सा असर डालते हैं। लोकगीतों की आवाज कान में गूंजते ही नई शक्ति मिल जाती है। फागुन माह के प्रारम्भ होते ही फगुआ, चैता और चैत्र माह में चैता का गायन ढोलक के साथ गाने की परंपरा है।

वादन : वाद्य यंत्रों से मन की बात अभिव्यक्त करने की परंपरा वैदिक काल से ही है। नृत्य हो या गीत सभी वाद्य यंत्रों के बिना पूर्ण नहीं होते। वाद्य यंत्र गीत एवं नृत्य को जीवंत कर देते हैं। लोक संगीत में मुख्य रूप से ढोल, नगाड़ा, तुरही, एकतारा आदि महत्वपूर्ण है। भारतीय संगीत में कुल 500 प्रकार के वाद्य यंत्र हैं। प्राचीन समय में युद्ध के प्रारंभ होने से पूर्व रणभेरी, दुंदुभि, शंख एवं तुरही जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता था। सबसे प्राचीन वाद्य डमरू को माना गया है। यह भगवान शिव का वाद्य है। संसार की समस्त भाषाओं का जन्म इसी से माना जाता है।

लोक कथा : लोक कथाएं, लोक जीवन का अभिन्न अंग मानी जाती हैं। इन लोक कथाओं में पौराणिक प्रसंगों से लेकर उपदेशपरक तथा मनोरंजक कथानक होता है। लोक कथाओं में क्षेत्र के नैतिक तत्व समाहित होते हैं। लोक कथाएं प्राचीन काल से मनोरंजन का माध्यम रही हैं। लोक कथाकार इसका प्रस्तुतीकरण बड़े मनोरंजक ढंग से करते हैं। यह समाज के प्रबुद्ध वर्ग जैसे धर्मवेत्ता, समाज सुधारक, पथ-प्रदर्शक और साहित्यकारों के लिए भी रोचक होता था। लोक कथाएं शादी-विवाह, कथा-कीर्तन एवं तीर्थ-यात्रियों के माध्यम से स्वीकार होती रही एवं उस पर स्थानीयता का आवरण चढ़ गया।

लोक गाथा : लोक गाथाएं मनुष्य के आदिम साहित्य का रूप हैं। लोक गाथाओं का उदय सामूहिक नृत्यों-गीतों के साथ पौराणिक घटनाओं या चमत्कारों के कारण हुआ है। इनके रचनाकार अज्ञात हैं। इसमें संगीत एवं नृत्य का साहचर्य होता है। लोक गाथाएं मौखिक परंपरा के कारण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुँचती रही है। यह मुख्य रूप से कथापरक गीत होते हैं। इसमें कहानी गीत के माध्यम से आगे बढ़ती है।

दृश्य-श्रव्य ग्रामीण संचार माध्यम

वे माध्यम जिनसे संदेश प्राप्त करने के लिए दर्शक को अपने आँख एवं कान दोनों का प्रयोग करना पड़ता है इसे दृश्य-श्रव्य माध्यम कहते हैं। यह माध्यम अन्य माध्यमों की तुलना में ज्यादा प्रभावी होते हैं। नुक्कड़ नाटक, नौटंकी, रामलीला, कृष्णलीला, कठपुतली आदि इसके प्रकार हैं।

नाटक : नाटक का जन्म नृत्य से हुआ है। नृत्य का भाव व विचार का विस्तार होने के पश्चात् वह नाट्यरूपों में परिवर्तित हो गया। नाटक आम जनमानस के लिए परम्परागत रूप से मनोरंजन एवं जागरूक करने का माध्यम रहा है। हिन्दी प्रदेशों में लोक नाट्य का विकास 15वीं शताब्दी के बाद हुआ है। अलग-अलग प्रदेशों में अपनी संस्कृति की झलक लिए हुए अलग-अलग लोक नाटक हैं। उत्तर प्रदेश में नौटंकी, बंगाल में जाला, मध्य प्रदेश में मंच, कर्नाटक में यक्षगण, तमिलनाडु में थेरूकुढ़, महाराष्ट्र में तमाशा, गुजरात में भवई मुख्य रूप से परंपरागत नाटक हैं। नाटक का समाज में बहुत महत्व रहा है। यह मनोरंजन के साथ विषय विशेष के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करता है।

नुक्कड़ नाटक : नुक्कड़ नाटक, ऐसा नाटक है, जो नुक्कड़ पर प्रदर्शित किया जाता है यानि आम जन के बीच में जाकर संदेश पहुंचाने का माध्यम। नुक्कड़ नाटक प्रायः आम बोलचाल की भाषा में होते हैं। यह महज मनोरंजन न होकर, जीवन की वास्तविकता को प्रदर्शित करते हैं। जिसके कारण दर्शकों में आत्मसम्मान पैदा होता है। इसमें नाटककार आम जनता को साथ रखता है और प्रभावी ढंग से अपनी बात दर्शक तक पहुंचाता है। शहरों में लोगों को जागरूक करने के लिए नुक्कड़ नाटकों के प्रयोग का प्रचलन बढ़ा है।

रामलीला एवं कृष्णलीला : लीला आम जनमानस में कथाख्यानों की प्रदर्शनधर्मी कला है, जिसके साथ अनुरंजनमय शिक्षण का संप्रेषण किया जाता है। रामलीलाओं में जिस प्रकार भगवान राम के कर्मों का गुणगान किया जाता है, उसी प्रकार कृष्ण लीला में भगवान श्रीकृष्ण के जीवन का चित्रण किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े भक्ति व श्रद्धा के भाव से लोग इसको देखते हैं।

कठपुतली : भारत के राजस्थान प्रदेश की कठपुतली कला बहुत ही पुरानी और समृद्ध मानी जाती है। इसका निर्माण व प्रदर्शन भाट जाति के लोग करते आ रहे हैं। भाट जाति नटबाजी तथा नाटक के लिए भी प्रसिद्ध है। यह माना जाता है कि ब्रह्म से नट की उत्पत्ति हुई और उन्होंने काठ से नाट नाम से काष्ठपुतली आधारित नाट्यों की शुरूआत की। कठपुतलियाँ होती तो निर्जीव है लेकिन उनका प्रदर्शन ऐसा होता है जैसे कोई सजीव कलाकार प्रस्तुति कर रहा हो। विभिन्न मसलों मसलन कम उम्र में विवाह, नशाखोरी, स्त्री, बालिका शिक्षा के निम्न स्तर को दूर करने के लिए आजकल इसका उपयोग सरकार भी कर रही है। ऐतिहासिक कहानियों, गाथाओं को बताने और जागरूकता फैलाने के लिए इसका उपयोग किया जाता रहा है।

ग्रामीण लोक संचार माध्यम का महत्व

ग्रामीण लोक संचार माध्यम सरल, सहज व अधिक बोधगम्य होते हैं। यह वातावरण के नीरसता, एकरसता, ऊब और भारीपन को दूर कर सरस, सगम्य, उमंग और उत्साही बना देता है। यह माहौल को रोचक और जीवंत बना देते हैं। यह माध्यम कोरा समुच्चय भर नहीं है, इसमें माटी की महक है, लोक की गमक है और सामाजिक प्रवाह का कलरव है। ये

समकालीन संस्कृति की धड़कन है, समाज और राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। ग्रामीण लोक संचार माध्यम में अगर भौगोलिक सीमाएँ, नदी, तालाब, पर्वत, घाटी, जंगल, कोहरा, जाड़ा, गर्मी, वर्षा, पवन, फूल और पशु-पक्षी प्राणवान हो उठते हैं तो इतिहास भी अपने पात्रों, पुरा प्रस्तर औजारों, मुहरों-मुद्राओं, सन्धि पत्रों, युद्धों और हार-जीत के साथ प्रत्यक्ष होने को लालायित हो उठता है। इतना ही नहीं इनमें उनकी जिजीविषा, पहचान, अस्मिता, गौरव बोध और सांस्कृतिक वैभव समाया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में ग्रामीण लोक संचार माध्यमों की एक बड़ी संभावना दिख रही है। यह एथेनेसिटी के बढ़ने का दौर है। जातीय और क्षेत्रीय अस्मिता का सवाल नए-नए रूपों में सामने आ रहा है। तमाम मानवीय समुदाय अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रहे हैं। अपनी पहचान की रेखा बताने के लिए अतीत के अध्याय को खोला जा रहा है। ऐसे में स्वाभाविक तौर पर लोकमानस में अपने जड़ों की ओर लौटने की छटपटाहट दिख रही है। इसलिए जरूरी है कि सरकार नए तकनीकी माध्यमों की ओर तो देखे ही ग्रामीण लोक संचार के माध्यमों की ओर भी ध्यान दे। तभी ग्रामीण लोक संचार माध्यम, आधुनिक तकनीकी माध्यम के साथ कदमताल कर सकेगा।

अंत में एक पंक्ति -

ले मशालें चल पड़े हैं अब लोग मेरे गाँव के।
अब अँधेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के

संदर्भ ग्रंथ

1. दुबे श्याम सुन्दर, लोक परम्परा पहचान एवं प्रवाह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2003
2. अग्रवाल डॉ. सुरेश, जनसंचार माध्यम, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
3. चौहान विद्या, लोक गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, 1972
4. अग्रवाल महावीर, लोक संस्कृति, आयाम एवं परिप्रेक्ष्य, शंकर प्रकाशन, दुर्ग, 1987
5. जैन प्रो. रमेश, जनसंचार विश्वकोश, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2007
6. चतुर्वेदी डॉ.गोपाल चन्द मधुकर, भारतीय चित्रकला ऐतिहासिक संदर्भ, साहित्य संगम, इलाहाबाद, 1999
7. नकवी हेना, पत्रकारिता एवं जनसंचार दिग्दर्शिका, डिस्काउंट ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन, गोरखपुर
8. जोशी मंजरी, भारतीय संगीत की परम्परा, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
9. चक्रवर्ती डॉ. कविता, भारतीय संगीत में वाद्ययंत्र, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 1990
10. कौशिक डॉ. जयनारायण, लोक साहित्य और संस्कृति-दिग्दर्शन, अविराम प्रकाशन, दिल्ली 2008
11. तिवारी डॉ. अर्जुन, जनसंचार समग्र, उपकार प्रकाशन, आगरा
12. भानावत डॉ.महेन्द्र, भारतीय लोक माध्यम, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2003
13. प्रसाद कमला, वसुधा, म.प्र. प्रगतिशील लेखक संघ, अंक-40, अगस्त-नवम्बर 1997
14. उपाध्याय नमी प्रसाद, भारतीय चित्रांकन परम्परा, ज्ञान गंगा, दिल्ली, 2003

One Day Interdisciplinary
State Level Seminar on

Effects of Demonetisation

February 11, 2017

LOK SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

LOK MAHAVIDYALAYA WARDHA (M.S.)

NAAC Reaccredited 'B' Grade

Organised By

Department of Commerce
in collaboration with
Department of Economics

Lok Shikshan Prasarak Mandal's

LOK MAHAVIDYALAYA, WARDHA

One Day Interdisciplinary State Level Seminar
on

"Effects of Demonetization"

Date : 11th February 2017

- CHIEF PATRONS -

Dr. Gajananrao J. Kotewar
President

Shri. Prakash S. Bhoyar
Secretary

Shri. S. P. Rode
Shri. N. D. Hemke
Prof. Sanjay S. Kotewar
Shri. Pundlikrao Kotewar
Shri. Amit Kasatwar

Dr. Kishor Sanap
Shri. A. N. Yeulkar
Sau. Tara Kotewar
Principal M. V. Thakare
Sau. Kavita Sanap

Dr. Sau. Pushpa S. Tayde
Principal

Dr. Rajiv M. Jadhao
Convener

- EDITOR IN CHIEF -

Dr. Avinash M. Sahurkar
Associate Professor, Dept. of Commerce

- EDITOR -

Dr. Vishwanath N. Betal
Dr. Sau. Suchitra S. Patne
Prof. Mahendra Sahare
Prof. Bhaskar J. Walke

- Published By -
Principal, Lok Mahavidyalaya, Wardha

- Publisher -

Psychoscan
58, Laxminagar, Wardha- 442001
Ph. 07152-244844, M- 9689889644
Email:- psychoscan02@gmail.com
ISBN: 978-81-922308-6-3

- Decleration -
The Present Publication is an academic exercise of Lok Mahavidyalaya, Wardha and other participants. The views expressed in Research papers are by the individual authors for which they are responsible and for any information, dada and views. The publisher and editors are not responsible. An attempt is made to edit the papers for qualitative improvement.

 ISBN: 978-81-922308-6-3

३९. विमुद्रीकरण का सकारात्मक प्रभाव और कैशलेस भारत

Anupama Kumari
Scholar,
Jansanchaar vibhaag
M.G.A.H.V, Wardha
Email- log2anupama@gmail.com
Mob-08888209383

भूमिका

आठ नवंबर, २०१६ को जब भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बड़ा कदम उठाते हुए ५०० और १००० के नोटों को उसी रात १२ बजे से बंद किए जाने की घोषणा की और ये कहा कि पेट्रोल पंप, अस्पताल, रेलवे स्टेशन इत्यादि को छोड़कर देश में कहीं भी ५०० और १००० के नोटों से लेन-देन पर रोक लग गई है, तो देश में खलबली मच गयी. हालांकि नोटों के प्रयोग और नोट बदलने के लिए ३० दिसंबर तक देश के किसी भी बैंक या डाकघर में जाकर अपने खातों में जमा कर बदलने की सुविधा दी गयी. सरकार ने पुराने नोटों की जगह ५०० और २००० के नए नोट जारी किए जो लोगों को बैंकों और एटीएम के माध्यम से मिलने शुरू हो गए. लांकि लेन-देन के पूरी तरह सामान्य होने में कुछ हते लगे और अफरा-तफरी भी मची. नोट बंदी की इस प्रक्रिया को विमुद्रीकरण कहते हैं. विमुद्रीकरण क्या है? सरकारें इसका फैसला क्यों लेती हैं और भारत में ऐसा कब-कब हुआ है? क्या इंडिया कैशलेस बनने को तैयार है और विमुद्रीकरण का जनता पर क्या प्रभाव पड़ा? इसी को लेकर यह शोध-पत्र तैयार किया गया है.

की वर्ड : रू विमुद्रीकरण, जमाखोरी, कालाधन, कैशलेस, प्रक्रिया, प्रभाव

शोध प्रविधि- १. प्राथमिक आंकड़रू प्रश्नावली पद्धयति एवं साक्षात्कार

२.द्वितीयक आंकड़ेरू साहित्यपुनारावलोकन एवं प्रकाशित-प्रसारित खबरों का अध्ययन

साहित्य पुनरावलोकन

१) काले धन के खिलाफ बुद्ध: विमुद्रीकरण एक साहसी कदम है, जिसके ठोस परिणाम निकलेंगे . जगदीश एन, भगवती, कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और कानून के प्रोफ़ेसर.

२) ब्रिक्स बैंक के अध्यक्ष के वी कामथ के अनुसार नोटबंदी से भारत सरकार को कोई ढाई लाख करोड़ रु का फायदा होगा। मतलब इतना काला धन पकड़ा जाएगा। इसका आखिर में बड़ा असर होगा। सरकारी बैंक सेहमतंद होंगे। ब्याज दरों में भारी कमी का वक्त आएगा। भ्रष्टाचार पर रोक लगेगी। कॉसी के चलन घटने और डिजिटल लेन-देन को ले कर सरकार के पास कई तुरूप कार्ड हैं। बाद में ब्याज दर और मुद्रास्फीति पर जब पूरा असर दिखाई देगा तो आर्थिकी दौड़ने लगेगी। नोटबंदी के बाद छह महीने की अवधि में ब्याज दर कम से कम १०० बेसिस पाइंट कम होनी चाहिए। मेरा विश्वास है कि इस कवायद से मरीज अच्छी हालत में निकलेगा और फिर वह लंबे समय तक बहुत अच्छा करता रहेगा।

३) स्वदेशी विचारक एस गुरुमूर्ति ने कहा.श्यह तो पोखरण जैसा वित्तिय साहसी धमाका है! इससे भारत बदल जाएगा। रियल एस्टेट की कीमते घटेगी, पारदर्शिता आएगी। देश रिबूट हो रहा है। काला धन मनोवैज्ञानिक बीमारी थी जिसे खत्म करना होगा। आगे वापिस काला धन पैदा हो सकना संभव नहीं

निष्कर्ष

विमुद्रीकरण एक साहसी और मौलिक आर्थिक सुधार की पहल है. निश्चय ही इस महत्वपूर्ण परिवर्तन पर लागत भी लगेगा लेकिन भविष्य में इससे पर्याप्त लाभ होने की संभावना है। निष्कर्ष के तौर देखा कहा जा सकता है कि नक्सलवाद को गहरा धक्का है और भ्रष्ट लोगों में बेचैनी है. रीयल एस्टेट (मकान, जमीन आदि) के दाम कम हो रहे हैं. भ्रष्टाचार में भी भारी कमी आने की उम्मीद है। चुनाव में कदाचार कम होगा, ऐसी भी आशा है। भारत एक नकद चालित अर्थव्यवस्था है, हालांकि जनसंख्या का एक बड़ा भाग तेजी से तकनीक प्रेमी भी होती जा रही है, देश में एक समानांतर अर्थव्यवस्था ने गहरी जड़ें जमा ली हैं, जिसके कारण बड़े पैमाने पर हवाला लेनदेन, कर अपवंचन, बेनामी अचल संपत्ति खरीद और सोने की तस्करी जैसी अवैध गतिविधि होती रही है।जिसे रोका जाना जरूरी था. भारतीय अर्थव्यवस्था, आर्थिक लेनदेन के डिजिटलीकरण की दिशा में बढ़ेगी और नकद मुद्रा की भूमिका कम होगी। फिलहाल कुछ महीनों की परेशानी है लेकिन बाद में इसके सुपरिणाम होंगे.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Gopika Gopakumar, Vishwanath Nair (8 November 2016). "Rs500, Rs1000 notes may be back, if history is a guide". *Live Mint*. अभिगमन तिथि 9 November, 2016
2. https://hi.oxforddictionaries.com @परिभाषा / विमुद्रीकरण
3. http://www.pravakta.com/indian-currency-vimudrikran-once-again10.08 p.m. dt- 04/02/2017
4. http://www.jagran.com/news/national-82-percent-people-agree
5. Damodaran, Harish (9 November 2016). "Are banks equipped to replace 2,300 crore pieces of Rs 500 and Rs 1,000 notes?". *Indian Express* - अभिगमन तिथि 9 November,2016"
6. Kumar Uttam (12 November 2016). "The measure is 'anti-poor': When BJP opposed demonetisation during UPA govt". हिंदुस्तान टाईम्स. अभिगमन तिथि: 12November 2016
7. ५०० और १००० का नोट बंद होने से शेयर बाज़ार में हाहाकार - बीबीसी - ९ नवम्बर २०१६
8. नोटबंदी के बाद अब निशाने पर हवाला कारोबार, दिल्ली समेत कई शहरों में इनकम टैक्स के छापे जारी -एनडीटीवी - १२ नवम्बर २०१६
9. नोटबंदी का असर : मणिपुर में अखबारों के दफ्तर हुए बंद - एनडीटीवी - १८ नवम्बर २०१६
10. नोटबंदी : ५० दिन पूरे होने की आहट के बीच, देश को ऐसे हुआ बड़ा फायदा..! नोटबंदी: संसद में हंगामा, सड़क पर बिखर गया विपक्ष का भारत बंद (नवभारत टाइम्स)
11. बंद विफल होने से बीजेपी गदगद, सतीश उपाध्याय बोले जनता का केजरीवाल से उठा भरोसा (आज तक)
12. नोटबंदी: जागरण के सर्वे में ८५ फीसद देश की जनता प्रधानमंत्री मोदी के साथ (दैनिक जागरण)
13. पाठक, राजीव (०१६). ''हजारों करोड़ का कालाधन घोषित करने वाला गुजरात का कारोबारी महेश शाह फरार'',समाचार (स्वच्छ भारत). अभिगमन तिथि: ७ दिसम्बर ०१६.
14. मोदी सरकार की नई स्कीम, डिजिटल भुगतान करने के लिए देगी इनाम

Lok Shikshan Prasarak Mandal's

LOK MAHAVIDYALAYA, WARDHA

One Day Interdisciplinary State Level Seminar
on

"Effects of Demonetization"

Date : 11th February 2017

- CHIEF PATRONS -

Dr. Gajananrao J. Kotewar
President

Shri. Prakash S. Bhoyar
Secretary

Shri. S. P. Rode
Shri. N. D. Hemke
Prof. Sanjay S. Kotewar
Shri. Pundlikrao Kotewar
Shri. Amit Kasatwar

Dr. Kishor Sanap
Shri. A. N. Yeulkar
Sau. Tara Kotewar
Principal M. V. Thakare
Sau. Kavita Sanap

Dr. Sau. Pushpa S. Tayde
Principal

Dr. Rajiv M. Jadhao
Convener

- EDITOR IN CHIEF -

Dr. Avinash M. Sahurkar
Associate Professor, Dept. of Commerce

- EDITOR -

Dr. Vishwanath N. Betal
Dr. Sau. Suchitra S. Patne
Prof. Mahendra Sahare
Prof. Bhaskar J. Walke

- Published By -
Principal, Lok Mahavidyalaya, Wardha

- Publisher -

Psychoscan

58, Laxminagar, Wardha- 442001
Ph. 07152-244844, M- 9689889644
Email:- psychoscan02@gmail.com

ISBN: 978-81-922308-6-3

- Decleration -

The Present Publication is an academic exercise of Lok Mahavidyalaya, Wardha and other participants. The views expressed in Research papers are by the individual authors fc are responsible and for any information, data and views. The publisher and ed responsible. An attempt is made to edit the papers for qualitative improvement.